ऋग्वेद ओ३म् यजुर्वेद

पवमान

(संयुक्तांक)

वर्ष : 33 बैशाख-ज्येष्ठ-आषाढ़ वि0स0 2078 अंक : 5-6 मई-जून 2021

मुद्रकः सरस्वती प्रेस, देहरादून वजनः 50 ग्राम

दिनांक 12 मई से 16 मई 2021 तक आयोजित ग्रीष्मोत्सव में आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।
कृपया कोरोना काल में सरकार द्वारा जारी निर्देशों का कड़ाई से पालन करना सुनिश्चित करें।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

संध्या सार

1- gs ijekuUn Hkxou! eSa vkidh 'kj.k esa vk;k gw¡A esjh lc fpUrk] Hk;] 'kksd] cU/ku nq[k vkfn Dys'k nwj djds eq>s vkuUn inku dj nhft,A

2- gs ije fHkk! eSa vkids lkeus ifrKk djrk gw¡ fd eSa viuh ok.kh] ukd] vk¡[k] dku vkfn lHkh bfUnz;ksa ls ifo= deZ fd;k d:¡xk] vifo= ughaA

3- gs ik.k fiz; fHkk! vki esjs ik.k& thou ds vk/kkj gSaA eSa lk/kd fuR; ifr ik.kk;ke dk djds viuh bfUnz;ksa dks o'k esa j[kw¡xkA

4- gs ikiuk'kd vk3e! vki on 'kkL=] psru vkSj tM+ txr&lw;Z pUnzekfn dk rFkk fnu] jkr] {k.k] egwrZ vkfn dk jpdj d.k&d.k esa O;kid esjs vUr;kZeh gSaA iki deZ ls jksdus ds fy, vki eq>s ifjr djrs gh jgrs gSaA

5- gs loZO;kid Hkxou! vki esjs vkxs] ihNs] nk;sa] ck;sa] Åij] uhps] vUnj] ckgj fojkteku gSaA o{k] ouLifr] lw;Z] vUu rFkk fo}ku vkfn lnk esjh j{kk djsaA eSa fdlh ls cSj fojks/k u d:¡ rFkk u gh dkbZ eq>s ls cSj djs D;ksafd vki U;k;dkjh gSa] vkidh U;k; O;oLFkk ls dksbZ cp ugha ldrkA

6- gs esjs vxz lxz jgus okys ije'oj! vki vukfn dky ls vUur dky rd esjs j{kd ,oa fe= gSaA vki vKku vU/kdkj ls iFkd+ djds eq>s ek{kkuUn inku dj nhft;sA

7- gs fe=] o#.k] vfXu] ije'oj! vki tM+ txr vFkkZr~ |qyksd vUrfj{k yksd vkSj iFoh yksd dks idk'kd gks vkSj psru vkReekvksa ds thou nkrk gksA

8- eSa vkidk vkKkdkjh f'k"; gw¡A d`i;k eq>s mÙke deZ djus okys dks vk'khokZn inku djsa fd vki dh lf"V esa mÙke deZ djrk gqvk lkS o"kksZ rd ns[ksa] osn Kku dks lquw lukÅ¡A bruk gh ugha lkS o"kksZ ls Hkh vf/kd dky rd thÅ¡ rFkk fdlh dk nhu] v/khu u cuw¡A

9- gs n;k ds lkxj fHkk! vki eq>s vkKkdkjh i= dk tks ikj] mikluk vkfn deksZa dk djrs gq, 'kh?kz dh /keZ] vFkZ] dke vkSj ek{k & 31 uhy 10 [kjc 40 vjc o"kZ dk vkuUn inku djsaA

सौजन्य से: शारीरिक एवं मानसिक रोगों का उपचार

ओ३म्

पवमान

वर्ष—33 अंक—5—6

बैशाख—ज्येष्ठ—आषाढ़ 2078 विक्रमी मई—जून 2021

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,122 दयानन्दाब्द : 197

★

—: संरक्षक :—

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती

मो. : 9410102568

★

—: अध्यक्ष :—

श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री

मो. : 09810033799

★

—: सचिव :—

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

—: आद्य सम्पादक :—

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

—: मुख्य सम्पादक :—

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 9336225967

★

—: सम्पादक मण्डल :—

अवैतनिक

आचार्य आशीष दर्शनाचार्य

मनमोहन कुमार आर्य—

मो. : 9412985121

★

—: कार्यालय :—

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून—248008

दूरभाष : 0135—2787001

मोबाईल : 7895978734 (श्री चन्दन सिंह)

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	आचार्य डॉ० रामनाथ वेदालंकार	3
ईश्वर का स्वरूप और मोक्ष	डॉ0 कृष्ण कान्त वैदिक	4
महात्मा बुद्ध ईश्वर में विश्वास रखने वाले आस्थावान (आस्तिक) थे	मनमोहन कुमार आर्य	7
परमात्मा हमारे सुख के लिये सृष्टि को बनाता है...	मनमोहन कुमार आर्य	10
हमारी साधनाओं का एक ही उद्देश्य है अन्तःकरण की शुद्धि...	मनमोहन कुमार आर्य	12
देशभक्त, त्यागी एवं बलिदानी अद्वितीय परमवीर सावरकर जी	मनमोहन कुमार आर्य	19
वैदिक धर्म में तलाक नहीं हो सकता	कीर्तिशेष आ0 प्रियव्रत वेदवाचस्पति	21
राम राज्याभिषेक : स्वागत समारोह	ईश्वरी प्रसाद प्रेम जी	23
आर्य समाज	आर्य रविन्द्र कुमार	25
उच्च रक्तचाप	डॉ. भगवान दास	27
श्रेष्ठता का चिह्न	वीतराग महात्मा प्रभु आश्रित जी	30
योगश्वर महाराज दयानन्द	प्रा0 राजेन्द्र "जिज्ञासु"	31

ofnd lk/ku vkJe rikou] ngjknu ds cSd [kkrk dk fooj.k

nku grq cSd [kkrs dk uke	cSd dk uke o irk	cSd vdkmUV u-	IFSC Code
vkJe dks nku nsus ds fy;s			
1- ^ofnd lk/ku vkJe**	dsujk cSd] Dykd Vkoj ckp ngjknu	2162101001530	CNRB0002162
ioeku if=dk 'kqYd			
2- ^ioeku**	dsujk cSd] Dykd Vkoj ckp ngjknu	2162101021169	CNRB0002162
rikou fo|kfudsru Ldwy ds fy;s			
3- ^rikou fo|k fudsru**	;wfu;u cSd] rikou jksM] ukykikuh] ngjknu	602402010003171	UBIN0560243

ioeku if=dk esa foKkiu ds jsV~l

1. कलर्ड फुल पेज — रु. 5000/— प्रति माह
2. ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज — रु. 2000/— प्रति माह
3. ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज — रु. 1000/— प्रति माह

lnL;ksa ds fy, ioeku if=dk ds jsV~l

1. वार्षिक मूल्य — रु. 200/— वार्षिक
2. 15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य — रु. 2000/—

ukssV% पवमान पत्रिका फुटकर विक्रय के लिए उपलब्ध नहीं है।

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

ईश्वर की महिमा

ईश्वर जीव और प्रकृति ये तीन आदि सत्तायें हैं। ईश्वर सत्, चित् और आनन्द स्वरूप वाला है। और सब जीवों को कर्मानुसार फल भी देता है। ऋग्वेद में एक मन्त्र हैः—

Átkir u RonrkU;U;ks fo'ok tkrkfu ifj rk cHkoA
;RdkekLrs tqgeLrUuks vLrq o;a L;ke ir;ks j;h.kkeAA

इस मन्त्र का भावार्थ यह है कि सब प्रजाओं के स्वामी परमात्मा से भिन्न दूसरा कोई नहीं है। सब उत्पन्न हुए जड़—चेतनादिकों को वह तिरस्कार नहीं करता है। वह सर्वोपरि है। वह हमारी कामनाओं को पूर्ण कर हमें धनैश्वर्यों का स्वामी बनाता है। मन्त्र के प्रथम भाग में वर्णित है—''प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वाजातानि परि ता बभूव'' अर्थात् जड़, प्रकृति और अल्प सामर्थ्य वाले जीवात्मा प्रभु की महिमा का अतिक्रमण नहीं कर सकते हैं। इसी प्रकार केनोपनिषद् में एक कथा है—''अग्नि, वायु आदि जड़ देव और इन्द्र आत्मा को यह अभिमान हो गया कि वे ही इस संसार को चला रहे थे। अन्य कोई दूसरा देव या शक्ति उनके समान नहीं था। जब वे यह विचार कर रहे थे, उसी समय उनके सामने एक यक्ष प्रकट हुआ। उसने अपने तेज से सबको अचम्भित कर दिया। देवों ने विचार किया कि वह यक्ष कौन है, इसका पता लगाना चाहिए। उन्होंने अग्निदेव से कहा— आप वहाँ जाकर पता लगायें। अग्नि अपने पूर्ण तेज के साथ वहाँ गया। यक्ष ने पूछा—आप कौन हैं? अग्नि ने गर्व के साथ कहा कि वह अग्नि है। यक्ष ने फिर कहा कि अग्नि बताये कि उसका बल व पराक्रम कितना है। अग्नि ने उत्तर दिया कि उसका पराक्रम इतना है कि वह किसी भी पदार्थ को पल भर में भस्म कर सकता है। अग्नि के ऐसा कहने पर यक्ष ने एक तिनका अग्नि के समक्ष रख दिया और कहा कि वह उसे जलाये। अग्नि ने अपनी पूरी शक्ति लगायी परन्तु वह उस तिनके को जला नहीं सका और लज्जित होकर लौट गया। उसके बाद वायु आया। उससे यक्ष ने कहा कि वह उस तिनके को उडा कर दिखाये। वायु ने अपनी पूरी शक्ति लगायी परन्तु वह उस तिनके को उड़ाने की बात तो दूर रही अपने स्थान से हिला तक नहीं सका। इसके बाद अन्य कई देव आए परन्तु कोई भी अपना पराक्रम नहीं दिखा पाया। उन्होंने इन्द्र से कहा कि वह जाकर उस यक्ष का परिचय प्राप्त करें। जैसे ही इन्द्र यक्ष के पास पहुँचने को हुआ कि वह यक्ष तिरोधान हो गया। उसी समय एक स्त्री वहाँ आयी। उसने अपना नाम उमा बताया। इन्द्र ने पूछा—''हे देवि! क्या तुम यक्ष के विषय में जानती हो? उमा ने बताया कि वह यक्ष और कोई नहीं अपितु साक्षात् परमात्मा ही थे। उन्हीं की महिमा और शक्ति से ये सारे देव महनीय और शक्तिशाली हुए थे। जब उसने उनसे अपनी शक्ति खींच ली तो ये शक्तिहीन हो गए थे। तुम लोगों को अपनी शक्ति का अभिमान हो गया था, जिसे हटाने के लिए यह घटना रचित की गई थी। उमा वृद्धि को कहते हैं। ईश्वर बाह्य चक्षुओं का विषय नहीं है। उसे ज्ञानचक्षुओं के द्वारा ही अनुभव किया जा सकता है। इसीलिये मन्त्र में कहा गया है कि परमेश्वर की महिमा को कोई चुनौती नहीं दे सकता है। उसकी महिमा अपरम्पार है।

MkW —".k dkUr oSfnd 'kkL=h

ओ३म्

वेदामृत

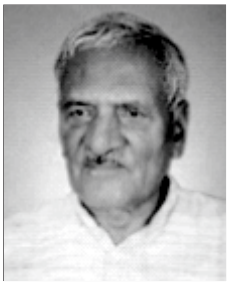

'बाधक शत्रु मार्ग से दूर हों'

vi R;a ifjifUFkua eq"khok.ka gqjf'pre~A
nwjef/k lzqrsjtAA

_Xosn 1-42-3

_f"k% d.oks ?kkSj%A nsork iw"kkA NUn% xk;=hA

¿हे पूषन्!, हे परमात्मन्À (त्यं) उस (परिपन्थिनं) मार्ग के बाधक शत्रु को (मुषीवाणं) चोर को ¿औरÀ (हुरिश्चतम्) कुटिलता का संग्रह करनेवाले को (स्त्रुतेः अधि) मार्ग से (दूरं) दूर (अज) फेंक दो।

धर्म मार्ग पर चलने की वेदादि शास्त्र बार–बार प्रेरणा करते हैं। परन्तु वह धर्ममार्ग आसान नही है, प्रत्युत बहुत ही कंटककीर्ण है। अनेक छद्मवेषी शत्रु मार्ग में बाधक बनकर आ खड़ें होते हैं, जिनसे लोहा लेना बड़ा ही कठिन हो जाता है। जब कोई धर्मपथ पर चलने का व्रत लेता है और अपनी यात्रा आरम्भ करता है, तब अधार्मिक लोगों में खलबली मच जाती है। वे सोचने लगते हैं कि धार्मिकों की संख्या शनैः–शनैः बढ़ती गई तो एक दिन ऐसा आयेगा कि अधर्म को कन्दरा में जाकर मुख छिपाना पड़ेगा और हम लोगों को कहीं पैर टिकाने तक का आश्रय नहीं मिल सकेगा। अतः वे धर्म–मार्ग में विघ्न डालने का षड्यन्त्र रचाते हैं और धर्ममार्ग के पथिकों को मोह में डालने के लिए अधर्म को ही धर्म के रूप में उपस्थित करने लगते हैं। वे कहते हैं कि कर्म–फल देनेवाला परमात्मा और कर्म–फल भोगनेवाला जीवात्मा कपोल–कल्पित वस्तुएं हैं, अतः इनसे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। जिसे करने में स्वयं को सुख मिलता है, वही धर्म है, अतः खाओ, पिओ, नाच–रंग की रंगरेलियों में मस्त रहो, यही सच्चा जीवन–दर्शन है और यही धर्म है। परन्तु वस्तुतः धर्म का यह रूप उपस्थित करनेवाले लोग धर्म–मार्ग के परिपन्थी या शत्रु हैं।

धर्मपथ का पथिक जिस सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि के पाथेय को साथ लेकर चलता है, उसे बीच में चुरा लेनेवाले 'मुषीवा' लोग भी बहुत–से मिलते हैं। वे हिंसा को अहिंसा से, असत्य को सत्य से, स्तेय को अस्तेय से, अब्रह्मचर्य को ब्रह्मचर्य से बड़ा बताकर और लुभावने रूप में उपस्थित करके अहिंसा आदि की सम्पत्ति को उससे ठग लेते हैं और 'हुरश्चित्' बनकर उसके मन को कुटिलताओं का आवास–भवन बना देते हैं। इन 'परिपन्थी', 'मुषीवा' और हुरश्चित्' व्यक्तियों से हम धर्म–यात्रियों को सावधान रहना होगा, अन्यथा हमारी यात्रा विघ्नित और विच्छिन्न हो जाएगी।

धर्म–यात्रा में हमें केवल इन बाह्य शत्रुओं का ही भय नहीं है, अपितु हमारे अन्दर भी शत्रु घर किये बैठे हैं। हमारे अन्दर प्रच्छन्न रूप से बैठे हुए अपने ही धर्म–विरोधी भाव धार्मिक भावों को दबा देना या चुरा लेना चाहते हैं और उनके स्थान पर हमारे अन्तःकरण को कुटिलताओं का संग्रहालय बना देने का षड्यन्त्र करते हैं। उन विरोधी भावों से भी हमें सचेत रहना होगा।

हे पूषन्! हे हमारे आत्मा को पोषण देनेवाले परमात्मन्! तुम हमारे धर्म–मार्ग में बाधा डालनेवाले बाह्य और आन्तरिक समग्र शत्रुओं को दूर फेंक दो तथा हमें निरन्तर अपनी धर्म–यात्रा प्रवृत्त रखने के लिए परिपुष्टि प्रदान करते रहो।

¼lkeosn dk laLd`r&fgUnh Hkk"; dkj ,oa vuqokn ofnd xzUFkksa ds ys[kd vkpk;Z MkW0 jkeukFk osnkyadkj dh iqLrd osn&eatjh ls lkHkkj iqLrr½

ईश्वर का स्वरूप और मोक्ष

&MkW0 —".k dkUr oSfnd

हम यह जानते हैं कि तीन आदि सत्तायें हैं–ईश्वर जीव और प्रकृति। अब हम यह विचार करते हैं कि ईश्वर का स्वरूप क्या है। वेद के एक मन्त्र में कहा गया है–

l Ik;kZxkPNØedk;eoz.keLukfoja&
'kq)eikifo)eA
dfoeZuh"kh ifjHkw%
Lo;EHkw;kZFkkrF;rks·FkkZu
O;n/kkPNk'orhH;% lekH;%AA

(यजु.20.8)

इस मन्त्र में परमात्मा के स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा गया है कि वह प्रभु चारों ओर गये हुए हैं अर्थात् सर्वव्यापक हैं। वह अत्यन्त दीप्त और उज्ज्वल हैं। वह शरीर रहित हैं और इस कारण से नस–नाड़ियों से शून्य हैं। वे प्रभु पूर्ण शुद्ध हैं और पाप से विद्ध नहीं हैं। प्रभु क्रान्तदर्शी हैं और प्रत्येक वस्तु के तत्त्व को जानते हैं। लोक में जो–जो व्यक्ति जितना–जितना बहुश्रुत और बहुदृष्ट होता जाता है, उतना ही उसका दृष्टिकोण व्यापक और सत्य होता जाता है। वे प्रभु विद्वान् और पूर्ण ज्ञानी हैं, क्योंकि 'परिभूः' अर्थात् सर्वत्र होने वाले हैं। उनके कवित्व और मनीषित्व का रहस्य इस परिभूपन में निहित है। इस प्रभु को किसी ने जन्म नहीं दिया है, क्योंकि वह स्वयम्भू हैं। प्रभु 'श्वाश्वतीभ्यः' अर्थात् सनातन हैं। समाभ्यः अर्थात् प्रजाओं के लिये और 'यातातथ्यतः' अर्थात् ठीक–ठीक सब बातों और वस्तुओं का 'व्यदधात्' अर्थात् प्रतिपादन व सम्पादन करते हैं। जीव की यह कमी है कि वह उन पदार्थों का ठीक से प्रयोग नहीं करता है ओर परमेश्वर की प्रेरणा को नहीं सुनता है। इसके फलस्वरूप वह कष्ट का भागी हो जाता है। इस

प्रकार इस मन्त्र के माध्यम से ईश्वर का वास्तविक और वैदिक स्वरूप ज्ञात होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के द्वितीय नियम में कहा है कि ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, निर्विकार, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय और पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करने योग्य है।

वेद में ईश्वर को बन्धु और मोक्ष सुख का दाता बताया गया है। एक वेद मन्त्र में कहा गया है:–

l uks cU/kqtZfurk l fo/kkrk /kkekfu osn
Hkqoukfu fo'okA
;= nsok ve`reku'kkukLr`rh;s
/kkeUu/;SjS;UrAA

(यजु. 32/10)

इस मन्त्र के पूर्वार्ध में ईश्वर के गुणों का वर्णन किया गया है। ''स नो बन्धुः'' अर्थात् वह हमारे भ्राता के समान सहायक और सुखदायक है। ईश्वर ने ही जगत् की उत्पत्ति की है। सृष्टि रचना के समय उसकी ईक्षण क्रिया से प्रकृति की साम्यावस्था में हलचल हुई और पहली रचना महतत्त्व अर्थात् समष्टि बुद्धि की रचना होने के पश्चात् अहंकार, इन्द्रियां, सूक्ष्मभूत (तनमात्रा) और पांच स्थूलभूतों की उत्पत्ति के पश्चात् ओषधी, वनस्पति और जीव–जगत् की उत्पत्ति हुई। ईश्वर का ज्ञान सदैव एकरस रहने के

कारण रचना का क्रम जैसे पहले सर्ग में था, वैसे ही इस सर्ग में और आगे के सर्गों में भी रहेगा। वह विधाता है। सृष्टि रचना के बाद ईश्वर ही उसे धारण करता है। जीवों को कर्मानुसार फल देता है। उनके कर्मों के अनुसार ही जीवों को जाति, आयु और भोग की प्राप्ति होती है। यदि यह कर्मफल सिद्धान्त की व्यवस्था न रहे तो सारी व्यवस्था छिन्न–भिन्न हो जायेगी।

ईश्वर वह परम सत्ता है जो सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, निर्विकार, निर्गुण, निराकार, शाश्वत, अगोचर, व असीम है। इसका महत्त्व और वर्णन वेद, उपनिषदों आदि सभी आर्ष ग्रन्थों में किया गया है। बिना ईश्वर की कृपा के सृष्टि का कोई भी कार्य सम्भव नहीं है। ईश्वर वह सत्ता है जो मनुष्य को उसके कर्मों के अनुसार फल देता है और यदि जीव के कर्म योग्य हों तो उसे जीवन–मरण के चक्र से मुक्त कर देता है।

श्रीमद्भगवद्गीता में ईश्वर की विराटता, क्रियास्वरूप, सर्वव्यापकता, जगद्सृष्टा, वेदज्ञानस्वरूप, पालनकर्त्ता, अविनाशी, कर्मफलदाता और सत्–असत् के आधार के रूप आदि में स्वीकार किया गया है।

वास्तव में ईश्वर निर्गुण, निराकार और परब्रह्म है। मनुष्य अविद्यावश इसे विभिन्न रूपों में पूजते हैं। सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ में उसकी अभिव्यक्ति है। प्रकृति और जीव की हर क्रिया में ईश्वर की शक्ति विद्यमान रहती है और सृष्टि की हर वस्तु ईश्वर की कृति है।

गीता में ईश्वर के विराट् स्वरूप के विषय में कहा गया है:–

Kku;Ku pkI;r ;tUrk ekeikIrA
,dRou iFkdRou cg/kk fo'orkse[keAA

अर्थात् दूसरे ज्ञानयोगी मुझ निर्गुण, निराकार ब्रह्म का ज्ञान यज्ञ के द्वारा अभिन्न भाव से पूजन करते हुए भी मेरी उपासना करते हैं। अतः इससे स्पष्ट होता है कि ईश्वर निर्गुण व निराकार स्वरूप है, परन्तु सामान्य जन परमात्मा को भिन्न–भिन्न भाव से पूजते हैं।

पतंजल योगसूत्र में ईश्वर का स्वरूप क्लेश कर्म, कर्मफल व इनके आशय से अस्पर्श पुरुष विशेष के रूप में वर्णित है। इसके अतिरिक्त वह सर्वज्ञ, पूर्वकाल से गुरुओं का गुरु, सर्वव्यापक व प्राणस्वरूप विवेचित किया गया है। समाधिपाद के इस सूत्र में कहा गया है–

Dys'kdefoikdk';jijke"V% i#"kfo'k"k%
b'oj%A

अर्थात् जो क्लेश, कर्म, कर्मों के फल और कर्मों के संसकारों के सम्बन्ध से रहित है। वह समस्त पुरुषों से उत्तम (पुरुषोत्तम) है अर्थात् महर्षि पतंजलि ईश्वर की व्याख्या करत हुए कहते हैं कि ईश्वर वह है, जो क्लेश, कर्म आदि और उनसे उत्पन्न कर्मफल आदि के सम्बन्धों से रहित है। इसलिये ईश्वर शरीरधारी नहीं होता, यदि वह शरीरधारी होता तो उसे कर्म आदि के फल भोगने पड़ते।

जीव का क्लेश, कर्म, कर्मफल व कर्म संस्कारों से अनादि सम्बन्ध है। ये सब विकार जीव में रहते हैं। जबकि ईश्वर का इनसे कोई सम्बन्ध नहीं है। ये सभी गुण विकारजन्य तथा अविद्यादि कारणों से हैं।

जिनका नाश होने पर आत्मा अपने स्वरूप को उपलब्ध हो जाता है। ईश्वर के गुणों में से कुछ गुण आत्मा में भी होते हैं। जीव में ईश्वर के समस्त गुण आना सम्भव नहीं है। इसीलिए परमेश्वर को पुरुष विशेष कहा जाता है। जीव में ईश्वर विद्यमान है। मुक्त पुरुष (मुक्त आत्मा) का भी इन प्रकृतिजन्य विकारों से पूर्व सम्बन्ध रहा था, किन्तु ईश्वर का तो इनसे कभी कोई सम्बन्ध नहीं रहा, इसलिये उसे पुरुष विशेष कहा जाता है।

r= fujfr'k; loKchteAA

अर्थात् उस ईश्वर में सर्वज्ञता का बीज (ज्ञान)

निरतिशय है। ईश्वर सर्वज्ञ है। सृष्टि के समस्त ज्ञान का बीज उसमें विद्यमान है और वह निरतिशय है। उस ज्ञान से बढ़कर कोई ज्ञान नहीं है। सृष्टि का समस्त ज्ञान उसी ज्ञान की एक न्यून अभिव्यक्ति है और उच्चकोटि का ज्ञान उसी से आता है। इसी कारण वेद के ज्ञान को ईश्वरीय ज्ञान कहा जाता है। ज्ञान प्राप्ति के बाद भी मनुष्य ईश्वर नहीं हो जाता क्योंकि जीव की अपनी सीमा है।

ईश्वर सर्वज्ञ है, इसलिये कहा जाता है कि जीव सीमित है और ईश्वर असीमित है।

i o'kkefi x#%dkyukuoPNsnkrA

वह ईश्वर पूर्वजों का भी गुरु है, क्योंकि उसका काल में अवच्छेद नहीं है, क्योंकि वह अनादि है। वह अनादि और ज्ञान का भण्डार है। सभी ज्ञान उसी से आया है।

rL; okpd% Á.ko%A

उस ईश्वर का वाचक (नाम) प्रणव (ओंकार) है। ईश्वर अनन्त गुणों वाला है, इसलिये उसका कोई नाम नहीं हो सकता और उसे नाम, रूप, परिमाण आदि की संकीर्णता में बांधना मनुष्य की संकीर्ण बुद्धि का परिचायक है।

ईश्वर शरणगति और ईश्वर प्रणिधानः– गीता में ईश्वर शरणगति और योगदर्शन में ईश्वर प्रणिधान का उल्लेख है। पातंजल योगदर्शन में यह विवेचन किया गया है कि ईश्वर प्रणिधान निर्बीज समाधि की प्राप्ति में सहायक होता है। ईश्वर प्रणिधान का अर्थ होता है कि अपने आप को पूर्ण रूप से ईश्वर के प्रति समर्पित कर देना अर्थात् तन, मन से पूर्ण रूप से शरणागत हो जाना। इसके लिये सब से पहले अपने अन्दर के अहंकार को नष्ट करना पड़ता है, तभी ईश्वर की भक्ति सम्भव है। गीता में शरणगति पर बल दिया गया है। गीता में श्रीकृष्ण कहते हैंः–

;k ;k ;k ;k ru HkDr% J)k;kfpZrqfePNfrA

rL; rL;kpyk J)k rkeo fon/kkE;geAA

अर्थात् जो कोई व्यक्ति श्रद्धापूर्वक जिस भी रूप की अर्चना करता है, उस–उस रूप में उसकी श्रद्धा को अचल बना देता हूँ। इसलिये भक्ति में श्रद्धा और विश्वास का होना अनिवार्य है। बिना श्रद्धा के सम्पूर्ण समर्पण अर्थात् शरणगति होना सम्भव नहीं है। ईश्वर प्रणिधान एक ऐसा मार्ग है, जिस पर चलकर हम साधक अपने लक्ष्य कैवल्य को प्राप्त कर सकते हैं।

मोक्ष या कैवल्य की प्राप्ति में ईश्वर की भूमिकाः– मनुष्य के जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष या कैवल्य प्राप्त करना है। यह प्राप्ति तब तक सम्भव नहीं है, जब तक ईश्वर की अनुकम्पा नहीं हो जाती है। ईश्वर प्रणिधान के द्वारा ही मोक्ष या कैवल्य की प्राप्ति सम्भव है। यदि हम गीता की दृष्टि से देखें तो उसमें कैवल्य को परमगति कहा गया है। गीता के अनुसार ईश्वर शरणगति के लिये ओंकार स्वरूप ब्रह्म का चिन्तन, निष्काम भक्ति, तत्त्वज्ञान आदि कैवल्य प्राप्ति में सहायक होते हैं। गीता में कहा गया है कि तत्त्वज्ञान परमगति (मोक्ष) में सहायक होता है। योगदर्शन में कैवल्य को परम लक्ष्य माना गया है और इसे एक पाद के रूप में रखा गया है। साधक यदि समाधि के लक्ष्य को प्राप्त करने के पश्चात् कैवल्य प्राप्त करना चाहता है तो उसे ईश्वर की शरणगति लेनी पड़ती है और ईश्वर की कृपा के द्वारा ही वह कैवल्य को प्राप्त कर सकता है। बिना ईश्वर प्रणिधान के साधक की वही स्थिति होती है जिस प्रकार रेलगाड़ी का डिब्बा बिना इंजन के पटरी पर ही पड़ा रहता है, जब तक पुनः इंजन उससे नहीं जुड़ जाता है। ठीक उसी प्रकार साधक निर्बीज समाधि की अवस्था में तब तक रहता है, जब तक वह ईश्वर प्रणिधान करके मुक्त नहीं हो जाता है। ईश्वर की सहायता से ही साधक परम तत्त्व को प्राप्त होता है अर्थात् कैवल्य की स्थिति आती है।

&c) if.kek ij&

महात्मा बुद्ध ईश्वर में विश्वास रखने वाले आस्थावान (आस्तिक) थे

&euekgu dekj vk;] ngjknu

महात्मा बुद्ध को उनके अनुयायी ईश्वर में विश्वास न रखने वाला नास्तिक मानते हैं। इस सम्बन्ध में आर्यजगत के एक महान विद्वान पं. धर्मदेव विद्यामार्तण्ड अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''बौद्धमत एवं वैदिक धर्म'' में लिखते हैं कि आजकल जो लोग अपने को बौद्धमत का अनुयायी कहते हैं उनमें बहुसंख्या ऐसे लोगों की है जो ईश्वर और आत्मा की सत्ता से इन्कार करते हैं तथा वेदों की निन्दा करते हैं। माननीय डा. भीमराव अम्बेदकर भी जिस बौद्धमत के प्रचार के लिए प्रयत्नशील थे उसमें भी बौद्धमत का ऐसा ही नास्तिक स्वरूप माना जाता है, किन्तु बौद्ध ग्रन्थों के निष्पक्ष अनुशीलन करने पर वह (पं. धमदेव विद्यामार्तण्ड) इस परिणाम पर पहुंचें हैं कि महात्मा बुद्ध ईश्वर की सत्ता से सर्वथा इनकार करनेवाले और वेदों की निन्दा करने वाले न थे, प्रत्युत आस्तिक थे। एक बड़ी कठिनाई महात्मा बुद्ध के यथार्थ विचार जानने में यह है कि उन्होंने स्वयं कोई ग्रन्थ नहीं लिखा। अब दीघनिकाय, मज्झिनिकाय, विनयम पिटक आदि जो भी ग्रन्थ महात्मा बुद्ध के नाम से पाये जाते हैं उनका संकलन उनके निर्वाण की कई शताब्दियों के पश्चात् किया गया जिनमें से बहुत–सी उक्तियां किंवदन्ती के ही रूप में हैं।

नास्तिक कौन होता है? इस प्रश्न को उठाकर उसका समाधान करते हुए आर्यविद्वान पं. धर्मदेव जी कहते हैं कि अष्टाध्यायी के 'अस्ति नास्ति दिष्टं मतिं' इस सुप्रसिद्ध सूत्र के अनुसार जो परलोक और पुनर्जन्म आदि के अस्तित्व को

स्वीकार करता है वह आस्तिक है और जो इन्हें नहीं मानता वह नास्तिक कहाता है। महात्मा बुद्ध परलोक और पुनर्जन्म को मानते थे इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता। इसलिये उन्हें सिद्ध करने के लिए अनेक प्रमाण देना अनावश्यक है। प्रथम प्रमाण के रूप में धम्मपद के जरावग्गो श्लोक (संख्या 153) 'अनेक जाति संसारं, सन्धाविस्सं अनिन्विस। गृहकारकं गवेस्संतो दुक्खा जाति पुनप्पुनं।।' में महात्मा बुद्ध ने कहा है कि अनेक जन्मों तक मैं संसार में लगातार

भटकता रहा। गृह निर्माण करनेवाले की खोज में बार–बार जन्म दुःखमय हुआ। श्लोक का यह अर्थ महाबोधि सभा, सारनाथ–बनारस द्वारा प्रकाशित श्री अवध किशोर नारायण द्वारा अनुदित धम्मपद के अनुसार है। दूसरा प्रमाण ब्रह्मजाल सुत्त का है जहां महात्मा बुद्ध ने अपने 2 या 4 नहीं अपित लाखों जन्मों के चित्तसमाधि आदि के द्वारा स्मरण का वर्णन किया है। वहां उन्होंने कहा है– भिक्षुओं! कोई भिक्षु संयम, वीर्य, अध्यवसाय, अप्रमाद और स्थिर चित्त से उस प्रकार की चित्त समाधि को प्राप्त करता है जिस समाधि को प्राप्त चित्त में अनेक प्रकार के जैसे कि एक सौ, हजार, लाख, अनेक लाख पूर्वजन्मों की स्मृति हो जाती है––''मै। इस नाम का, इस गोत्र का, इस रंग का, इस आहार का, इस प्रकार के सुखों और दुःखों का अनुभव करनेवाला और इतनी आयु तक जीनेवाला था। सो मैं वहां मरकर वहां उत्पन्न हुआ। वहां भी मैं इस नाम का था। सो मैं वहां मरकर यहां उत्पन्न हुआ।'' इत्यादि। अगला तीसरा प्रमाण धम्मपद के उपर्युक्त वर्णित श्लोक का अगला श्लोक है जिसमें गृहकारक के रूप में आत्मा का निर्देश किया गया है। श्लोक है– 'गह कारक दिट्ठोऽसि पुन गेहं न काहसि। सब्बा ते फासुका भग्गा गहकूटं विसखिंतं। विसंखारगतं चित्तं तण्हनिं खयमज्झागा।।' इस श्लोक के अनुवाद में इसका अर्थ दिया गया है कि हे गृह के निर्माण करनेवाले! मैंने तुम्हें देख लिया है, तुम फिर घर नहीं बना सकते। तुम्हारी कड़ियां सब टूट गईं, गृह का शिखर गिर गया। चित्त संस्कार रहित हो गया, तृष्णाओं का क्षय हो गया। इस पर टिप्पणी करते हुए पं. धर्मदेव जी कहते हैं कि यह मुक्ति अथवा निर्वाण के योग्य अवस्था का वर्णन है। जब तक ऐसी अवस्था नहीं हो जाती तब तक जन्म–मरण का चक्र चलता रहता है। इस प्रकार यह सर्वथा स्पष्ट है कि महात्मा बुद्ध परलोक, पुनर्जन्म आदि में विश्वास करने के कारण आस्तिक थे।

महात्मा बुद्ध के आस्तिक होने से संबंधित अगला प्रश्न यह है कि क्या वह अनीश्वरवादी अर्थात ईश्वर में विश्वास न रखने वाले थे? इसका समाधान करते हुए पं. धर्मदेव जी लिखते हैं कि नास्तिक शब्द का एक प्रचलित अर्थ ईश्वर की सत्ता से इन्कार करनेवाले का है। क्या महात्मा बुद्ध ईश्वर की सत्ता से इन्कार करनेवाले थे इस विषय में अपने विचार संक्षेप से माननीय डॉ. अम्बेदकर जी से बात–चीत के प्रसंग में (संदर्भः सार्वदेशिक जुलाई 1951 अंक) प्रकट कर चुका हूं। इस विषय पर कुछ अधिक प्रकाश डालने से पूर्व मैं 'सन्त सुधा' के सम्पादक श्री ईश्वरदत्त मेधार्थी अणुभिक्षु बुद्धपुरी कानपुर के लेख से कुछ उद्धरण देना उचित समझता हूं। 'सन्त सुधा' के बुद्ध जयन्ती अंक में 'सन्त सिद्धार्थ' शीर्षक से महत्वपूर्ण अपने लेख में श्री मेधार्थी ने लिखा है कि ब्रह्म के विषय में भगवान बुद्ध स्वयं कहते हैं– ''ब्रह्मभूतो अतितुलो मारसेन प्पमद्दनो। सब्बा मित्ते बसीकत्वा, मोदामि अकुतोभयो।।'' अर्थात्– मैं अब ब्रह्म पद को प्राप्त हुआ हूं, मेरी तुलना अब किसी से नहीं है, मैंने मार (कामदेव) की सेना को मर्दित कर दिया है। अब मैं काम, क्रोध आदि सब अन्तः शत्रुओं को वश में करके निर्भय होकर मस्त हो रहा हूं। विद्वान लेखक पं. धर्मदेव इस पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं कि यह एक ही वचन भगवान बुद्ध की आस्तिकता और ब्रह्मपद प्राप्ति के लिये पर्याप्त है। जरा–सी समझने की बात है कि जो स्वयं ब्रह्मविहार करता हो, ब्रह्मचारी हो, ब्रह्मभूत हो (यह सम्भव ही नहीं है कि) वह ब्रह्म को न माने? वास्तव में बौद्ध साहित्य में निर्वाण, ब्रह्म, अमृतपद, परमसुख, उत्तम अर्थ, अनाष्यात, दुलर्भनाथा आदि शब्द एकार्थवाचक हैं।

जिज्ञासुओं को भ्रम में नहीं पड़ना चाहिये। भगवान बुद्ध ने स्वयं कहा है– जो नास्तिक हैं उन्हें विनाशोन्मुख समझो। एक बात है– भगवान् बुद्ध आस्तिक तो थे ही, आर्य भी थे। आर्य शब्द से उन्हें बड़ा प्रेम था। चार आर्य सत्य, आर्य, अष्टांगिक मार्ग और आर्यश्रावक तो बहुत प्रसिद्ध हैं। आर्य

शब्द गुणवाची है। आर्य शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ। इसलिये श्रेष्ठता, उच्चता, और उत्तमता की भावना के लिये 'आर्य शब्द' भगवान बुद्ध ने प्रयोग किया है। इसीलिये बुद्धपुरी में आस्तिकता और अहिंसकता की श्रेष्ठ भावना को पुष्ट करने के लिये 'आर्य बौद्ध' शब्द का प्रचार किया जाता है। भगवान बुद्ध ने भी धम्मपद में स्वयं कहा है– 'न तेन अरियो होति, येन पाणानि हिंसति। अहिंसा सबपाणानं, अरियोति पवुच्चति।।' (धम्मपद श्लोक 270, धम्मट्ठवग्गो 15) अर्थात् प्राणियों का हनन कर कोई आर्य नहीं होता, सभी प्राणियों की हिंसा न करने से उसे आर्य कहा जाता है। (सन्तसुधा कानपुर बुद्ध जयन्ती अंक मई 1950 पृष्ठ 10–11)। लेखक महोदय कहते हैं कि आचार्य मेधार्थीजी का उपर्युक्त लेख महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने बौद्ध ग्रन्थों का विशेष अनुशीलन करके उसे लिखा है और वे अपने को आर्य बौद्ध नाम से ही कहते हैं। पत्रिका सन्त–सुधा के मई 1950 अंक में आर्य बौद्ध संघ बुद्धपुरी के कुलगुरू श्री ज्ञानक्षेत्रजी की एक सूक्ति भी प्रस्तुत की गई है। यह सूक्ति है 'You will find so many Bhikshoos coming here (in Buddha Puri). They are the enemies of Om; but you will never leave Om, every thing is in Om, Lord Buddha is also in Om.' अर्थात् यहां बुद्धपुरी में आप कई भिक्षुओं को आते हुए पाते हैं जो ओम् (परमात्मा) के शत्रु या विरोधी हैं किन्तु आपको ओम् का परित्याग कभी नहीं करना चाहिये। सब कुछ ओम् में है। बुद्ध भगवान् भी ओम् में हैं।

बुद्धत्व की प्राप्ति के पश्चात् अपने प्रथम ही उपदेश में जो सारनाथ में महात्मा बुद्ध जी ने दिया उसमें उन्होंने कहा– ''अहं भिक्खवे! तथागत सम्मासम्बुद्धो उदूहथ भिक्खवे। सोतं अमतं अधिगतम् अहमनुसासामि अहं धर्म्मं देसेमि।'' अर्थात् भिक्षुओं ! मैं अब बुद्ध हो गया हूं। मैंने 'अमृत' की प्राप्ति कर ली है। अब मैं धर्म का उपदेश करता हूं। पं. धर्मदेव जी कहते हैं कि अमृत नाम वेद और उपनिषदों में ब्रह्म अर्थात् ईश्वर के लिए प्रयुक्त हुआ। इसके उदाहरण भी आपने दिये हैं। धम्मपद श्लोक 160 (अत्तवग्गो 4) ''अत्ताहि अत्तनो नथो को हि नाथो परो सिया अत्तनां व सुदन्तेन, नाथं लभति दुल्लभं।।'' में ईश्वर की सत्ता को महात्मा बुद्ध स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हुए कहते हैं कि आत्मा ही आत्मा का नाम है और कौन उस (परमात्मा) से बड़ा नाथ व स्वामी हो सकता है। अच्छी प्रकार आत्मा का दमन कर लेने से दुर्लभ नाथ (परमात्मा) की प्राप्ति होती है। 'नाथं लभति दुल्लभं' यह शब्द अत्यन्त स्पष्टरूप से दुर्लभ नाथ (परमात्मा) का निर्देश करते हैं। यद्यपि अनीश्वरवादी आधुनिक बौद्ध इसका अर्थ निर्वाण कर देते हैं जो संगत नहीं होता और जिसमें खींचा–तानी भी बहुत अधिक करनी पड़ती है।

उपर्युक्त विवरण से सिद्ध है कि महात्मा बुद्ध ईश्वर विश्वासी व आस्तिक थे, अनीश्वरवादी नहीं।

जीनदाता नींबू

1. सूजन हो उसमें दर्द हो तो उस स्थान पर नींबू को मलने से सूजन कम हो जाती है।
2. गले की टॉन्सिलों की यह अचूक दवा है। एक छोटी खली कोटोरी में आधा नींबू निचोड़कर इस कटोरी को गरम पानी में रख दें और जब नींबम का रस गरम हो जाए तो उसमें दो चच्मच शहद डालकर उसको दिन में दो बार धीरे–धीरे उंगली से चाटें, चार–पांच दिन के प्रयोग से आराम हो जायेगा।

&rikou vkJe e pr[kn ikjk;.k ;K lEiUu&

परमात्मा हमारे सुख के लिये सृष्टि को बनाता हैः स्वामी चित्तेश्वरानन्द

&euekgu dqekj vk;Z] nsgjknwu

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून की पर्वतीय इकाई तपोभूमि में दिनांक 7 मार्च से 28 मार्च 2021 तक चतुर्वेद पारायण एवं गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवधि में योग एवं ध्यान शिविर भी संचालित हुआ। यह आयोजन स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी की प्रेरणा, उनके संरक्षण एवं पोषण सहित उनके मार्गदर्शन में हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा सोनीपत से पधारे शीर्ष वैदिक विद्वान आचार्य सन्दीप जी थे। यज्ञ में वेद मन्त्रोच्चार गुरुकुल पौंधा, देहरादून के चार ब्रह्मचारियों ने किया। यज्ञ में देश के अनेक भागों से लोग यज्ञ शिविर में पधारे और वृहद यज्ञ को सफल किया।

यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार दिनांक 28–3–2021 को हुई। इस अवसर पर विद्वानों के प्रवचन सहित माता सुनन्दा एवं साध्वी प्रज्ञा जी का सम्मान हुआ। यज्ञ के प्रत्येक सत्र में स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी सामूहिक यज्ञ प्रार्थना कराते थे। इस समापन दिवस पर प्रार्थना कराते हुए उन्होंने परमात्मा से निवेदन किया कि हे परम कारुणिक परम दयालु परमेश्वर! आप की कृपा तथा आपके द्वारा दी हुई सामग्री से यह छोटा सा उपक्रम हम कर पायें हैं। हम यह यज्ञ एवं अपने सभी पुरुषार्थ आपको अर्पण करते हैं। हमने यह जो यज्ञ किया है इसमें हमारा अपना कुछ भी नहीं है। आप उदार हैं। vkius gekjs fgr o l[k d fy; gh bl fo'kky czgek.M dk cuk;k gSA आपने हमारे लिए यह पृथिवी वा भूमि कितनी विशाल बनाई है। हमारी इस पृथिवी से संसार के सभी प्राणियों को भोजन मिल रहा है। हमें मनुष्य शरीर भी आपने ही दिया है। आपने ऋषियों के देश में जन्म देकर हम पर

महान उपकार किया है। आपने सृष्टि के आरम्भ में हमें व हमारे पूर्वजों को वेदज्ञान दिया। समय व्यतीत होने के साथ वेद हमसे छूटते चले गये। आपकी महान कृपा से उन्नीसवीं शताब्दी में एक महान आत्मा स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का आविर्भाव हुआ। उन्होंने वेदों का जन–जन को सन्देश दिया। लोगों ने स्वार्थ वश उन्हें मार दिया। उनके असमय चले जाने से वेद प्रचार का काम अधूरा रह गया। हे परमेश्वर! आप कृपा करके ऋषि दयानन्द के समान पवित्र आत्माओं को हमारे देश में जन्म देकर भेजिये जिससे वेदों का प्रचार होकर हमारा वैदिक धर्म तथा संस्कृति सुरक्षित रहे। हम आपसे वेद धर्म के प्रचार में

सहयोग करने की प्रार्थना करते हैं।

स्वामी जी ने कोरोना रोग की भी चर्चा की और ईश्वर से प्रार्थना की कि आप प्राणी मात्र की इस रोग से रक्षा करें। स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी ने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के गुणों व कामों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि मोदी जी देश के लिए समर्पित होकर काम कर रहे हैं। वह ईमानदार एवं धीर व गम्भीर पुरुष हैं। लोग उनसे शत्रुता रखते हैं। ईश्वर से स्वामी जी ने कहा कि आप सब प्रकार से मोदी जी रक्षा करें। उन्होंने कहा कि मोदी जी ने देश की उन्नति के बहुत से अच्छे काम किये हैं। स्वामी जी ने मोदी जी को अपना स्वप्न साकार करने में परमात्मा से सहयोग देने की प्रार्थना की। स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी ने श्री आदित्यनाथ योगी जी के गुणों व कार्यों की भी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि सब मनुष्यों को वेद ज्ञान प्राप्त हो। सबकी अविद्या दूर हो जाये। सब विद्या से युक्त हों। स्वामी जी ने कहा हम परस्पर व दूसरों के साथ आर्योचित व्यवहार करें। हम सब बलवान तथा स्वस्थ शरीर हों। परमेश्वर से स्वामी जी ने कहा कि वह सबका मंगल, भला तथा कल्याण करें। इसी के साथ स्वामी जी ने सामूहिक प्रार्थना पूरी की।

स्वामी जी के बाद आचार्य सन्दीप जी, स्वामी आशुतोष जी, रोजड़, डा. महावीर अग्रवाल, कुलपति पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार, साध्वी प्रज्ञा जी तथा आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी के सम्बोधन हुए। शान्ति पाठ एवं जयघोष के साथ चतुर्वेद पारायण यज्ञ, गायत्री यज्ञ तथा योग एवं ध्यान शिविर सम्पन्न हुआ। आयोजन की समाप्ति के बाद सबने मिलकर ऋषि लंगर ग्रहण किया और तत्पश्चात् सभी याज्ञिक अपने साधनों वा वाहनों से अपने अपने गृहों को प्रस्थान कर गये।

श्रीमती सन्तोष मुंजाल जी को विनम्र श्रद्धांजलि

श्रीमती संन्तोष मुंजाल जी 'हीरो मोटर कॉरपोरेशन' की स्तम्भ, मुंजाल परिवार की मार्गदर्शक तथा आर्य समाज की ध्वजवाहक थीं। उनके निधन के समाचार से तपोवन आश्रम के समस्त आश्रमवासियों ने इस समाचार को अपनी व्यक्तिगम क्षति अनुभव करते हुए परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा के अपवर्ग के लिए यज्ञ के माध्यम से प्रार्थना की। माता सन्तोष मुंजाल जी अत्यन्त सरल हृदय एवं अतिथि सत्कार की प्रतिमूर्ति थीं। मुझे तीन बार उनके दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कई बार उन्होंने वैदिक साधन आश्रम तपोवन की आर्थिक सहायता प्रदान करके पवित्र कार्य में हवि प्रदान की। तपोवन आश्रम उनके द्वारा दिये गये दान के लिए उन्हें सदैव स्मरण रखेगा।

परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को मोक्ष मार्ग का पथिक बनायें और उनके समस्त परिवार को आर्य समाज के उच्च आदर्शों का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करता रहे। हम तपोवन आश्रम के समस्त पदाधिकारी एवं पवमान परिवार के सभी सदस्य श्रीमती संन्तोष मुंजाल जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। ओ3म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

&bl'oj lk{kkRdkj d fy, i;klj rifLouh lk/oh iKk th dk lEck/ku&

हमारी साधनाओं का एक ही उद्देश्य है अन्तःकरण की शुद्धिः साध्वी प्रज्ञा

&euekgu dekj vk;] ngjknuA

वैदिक साधन आश्रम तपोवन में रविवार दिनांक 28 मार्च, 2021 को 22 दिवसीय चतुर्वेद पारायण एवं गायत्री यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। इस अवसर पर यज्ञ में उपस्थित साध्वी प्रज्ञा जी का सम्बोधन हुआ। साध्वी जी ने 29 वर्ष तक योग एवं ध्यान साधना की है। उन्होंने विगत 9 वर्षों में 3 बार तीन–तीन वर्ष तक मौन व्रत तथा अदर्शन व्रत का पालन किया है। उन्होंने अपने ध्यान व मौन व्रत के अनुभव सुनाते हुए बताया कि तीन बार तीन तीन वर्ष की अवधि के लिये मौन व्रत सहित अदर्शन व्रत की सफल साधना भी की है। ईश्वर का ध्यान व उपासना सहित दैनिक यज्ञ उनके जीवन का अनिवार्य अंग है। साध्वी प्रज्ञा जी ने अपना सम्बोधन भजन व गीत से किया। ईश्वर से प्रार्थना करते हुए उन्होंने कहा कि प्रभु मेरी स्तुति को अपने अन्तर में धारण करें। ईश्वर मेरे चित्त को पवित्र करें। उन्होंने कहा कि हमारी साधनाओं का एक ही उद्देश्य है कि हमारा अन्तःकरण शुद्ध हो। ज्ञान से मुक्ति होती है तथा अविद्या से बन्धन होता है। साध्वी प्रज्ञा जी ने कहा कि वेदों का अध्येता व उपासक जो जागता है, वेद की ऋचायें उसकी ही कामना करती हैं। ऋचायें साधक के हृदय में मन्त्रों का अर्थ प्रकट करती हैं। उन्होंने आगे कहा कि हम अपनी आत्मा को जागरुक करने में समय नहीं लगाते। हमसे प्रायः आत्मा की उन्नति के कार्यों की उपेक्षा होती है। उन्होंने प्रश्न किया कि हममें से कितने लोग हैं जो सत्य का आचरण करते हैं? उन्होंने कहा कि हम जागरुक हों और ऊपर उठें। हमें मनुष्य जन्म श्रेष्ठ कर्मों के कारण प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा

कि ईश्वर की सत्ता के सम्मुख हम कुछ भी तो नहीं हैं।

साध्वी प्रज्ञा जी ने कहा कि हमें विचार करना चाहिये कि ईश्वर के ज्ञान के सम्मुख हमारा ज्ञान कितना है? अपने बारे में उन्होंने बताया कि उन्होंने सन् 1991 में घर छोड़ा था। तब उनकी अवस्था व आयु 15–16 वर्ष की थी। उन्होंने कहा कि वह अपने साधिका के जीवन में प्रतिदिन प्रातः 2–3 बजे उठती रहीं। उन्होंने बताया कि वह 18–19 वर्ष महाशक्ति सिद्धपीठ शुक्रतीर्थ, मुजफ्फरनगर, उत्तरप्रदेश की योगिनी मां राजनन्देश्वरी जी के सान्निध्य में रही हैं। वह आरम्भ से प्रतिदिन 6–7 घण्टे उपासना करती रहीं हैं। उन्हें साधना व उपासना करते हुए 29

वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। उन्होंने 9 वर्ष पूर्णतः (मौनव्रत व अदर्शन) साधना में व्यतीत किये हैं।

साध्वी प्रज्ञा जी ने बताया कि वह प्रतिदिन प्रातः 4 घंटे ध्यान करती हैं। उन्होंने भूमध्य में ध्यान किया है। वह 4 घंटे सोती हैं। उनकी निद्रा में एक घंटा योग निद्रा का होता है। उन्होंने एक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह बताई कि उन्हें विगत 3 वर्षों में मात्र 3 बार ही ईश्वर की प्रतीती हुई है। इन पंक्तियों के लेखक को लगता है कि यह बात उन्होंने समाधि अवस्था में ईश्वर के साक्षात्कार के परिप्रेक्ष्य में कही है। उनकी बात करने व बात के लहजे से यह प्रतीत हुआ कि वह जो कह रही हैं वह यथार्थ कथन है, कहीं कोई अतिश्योक्ति वा आत्म प्रशंसा उनके कथन में प्रतीत नहीं हुई। ईश्वर से प्रार्थना करते हुए उन्होंने कहा कि हम सब वैदिक धर्म व संस्कृति को धारण करने में समर्थ हों।

साध्वी जी ने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए अत्यन्त भावविह्वल शब्दों में कहा कि हे ईश्वर भवसागर से हमारी जीवन नैया को पार करो। मेरी निंदिया मेरे वश में कर दो। उन्होंने परमात्मा से प्रार्थना की कि हे परमेश्वर मन पर हो अधिकार हमारा हर लो सारी चंचलता। हे प्रभु! तुम हमें निन्दा स्तुति में हमें सम रहना सिखा दो। होकर समाधिष्ट हे भगवन् हो जाऊं मैं तुमसे युक्त। राग द्वेष की भट्टी में प्रभु हमें नहीं जलने देना। देकर विवेक सब दोषों को हे स्वामी तुम हर लेना। तृष्णाओं की दलदल में हे प्रभु हमें नहीं धंसने देना। प्रभु पाने की एषणा से परिपूर्ण मेरे मन को कर देना। थोड़ा सा जो ज्ञान है हममे उसके लिए न अभिमान करें। हे अनन्त सर्वज्ञ पिता आपका सर्वदा हम गुणगान करें। जन्म मृत्यु की काटो बेड़ी दुःख सागर से पार करो, परमानन्द परमपद पावन यह विनती स्वीकार करो।। हे पूज्य पिता स्वीकार करो, हे परम पिता स्वीकार करो, भव सिन्धु से हमें पार करो।। यह शब्द प्रज्ञा जी की स्वरचित काव्य रचना के थे जिन्हें सुनकर हमने कुछ मात्रा में लिखने का प्रयास किया। पूरा व यथावत् हम लिख नहीं पाये। इसी के साथ उन्होंने अपने सम्बोधन व अपनी योग व उपासना सहित व्रतों से हुए लाभ व उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति में उपस्थित होकर एवं तपस्विनी साध्वी प्रज्ञा जी के दर्शन कर व उनका सम्बोधन सुनकर हमें आत्मसन्तोष एवं प्रसन्नता हुई। आज समाज में प्रज्ञा जी के समान तपस्वी साधकों का सर्वथा अभाव है। हम आशा करते हैं कि प्रज्ञा जी का भावी जीवन वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में व्यतीत होगा। वह ईश्वर साक्षात्कार की जिस साधना में तप कर रहीं हैं, वह सफल होगीं, ऐसी हमें आशा है।

आचार्या साध्वी प्रज्ञा जी ने चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न होने के बाद सामूहिक प्रार्थना कराई। उनके कुछ शब्दों को हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। साध्वी प्रज्ञा जी ने पहले ईश्वर भक्ति का स्वरचित भजन प्रस्तुत किया। उसके बाद उन्होंने दीर्घ स्वर से ओ३म् का उच्चारण कराया। इसके पश्चात उन्होंने सन्ध्या के नमस्कार मन्त्र 'ओ३म् नमः शम्भवाय च' को ईश्वर में लीन होकर मधुर स्वरों से पाठ किया। ऐसा करने के बाद उन्होंने हिन्दी भाषा में ईश्वर से प्रार्थना की। उन्होंने परमात्मा को प्रार्थना करते हुए कहा कि उन्होंने नौ वर्ष तक अदर्शन मौनव्रत किया है। वह अपने इस व्रत को करने में किये गये श्रम व तप वा साधना को ईश्वर को समर्पित करती हैं। साध्वी प्रज्ञा जी ने कहा कि हमारा अन्तःकरण दोषों से भरा है। हममें मलीनता भरी पड़ी है। ईश्वर से उन्होंने सभी दुरितों व क्लेषों को दूर करने की प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि परमात्मा उनमें वैराग्य का आधान करें। उन्होंने

ईश्वर से अनन्य भक्ति देने की भी प्रार्थना विनीत, सरस व मधुर स्वरों में बोलकर की और कहा कि हम आपसे यही याचना करते हैं।

साध्वी प्रज्ञा जी ने स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के श्रेष्ठ गुणों सहित उनके आचारण व व्यवहार पर प्रकाश डाला और उनकी भूरि भूरि प्रशंसा कृतज्ञता के भावों में भर कर की। उन्होंने देहरादून के धौलास आश्रम के संचालक स्वामी विशुद्धानन्द तथा संन्यासिनी माता सुनन्दा जी के अत्यन्त प्रेम एवं सम्मानजनक व्यवहार के लिए भी आभार एवं कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि आश्रम में उनके व्रत को पूरा करने में इन सभी ने उनसे पूरा पूरा सहयोग किया जिससे वह इस मौनव्रत व अदर्शन व्रत को सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सकीं हैं। स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के देवत्व से भरे गुणों को प्रस्तुत कर साध्वी प्रज्ञा जी रो पड़ी और कुछ देर रुक कर उन्होंने अपना सम्बोधन जारी रखा।

साध्वी प्रज्ञा जी ने कहा कि सभी ऋषि व वेदभक्तों सहित अन्य इतर सभी मनुष्य सुपथ के अनुगामी हों। सब लोग सभी तापों से मुक्ति पाने वाले हों। साध्वी प्रज्ञा ने अपनी ईश्वर से प्रार्थना में विश्व के कल्याण की कामना भी की। साध्वी जी ने सभी लोगों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के स्वस्थ जीवन एवं दीर्घायु की कामना की। उन्होंने कहा कि हम भी उनके समान उदार तथा पावन बन सकें। मानव मात्र एक दूसरे के सहयोगी हों। सब मनुष्य धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की प्राप्ति के साधक बनें। उन्होंने अन्त में कहा कि मैं जीवन भर परमात्मा से जुड़ी रहूं और उनका सदैव ध्यान, चिन्तन व उपासना करती रहूं। ईश्वर मेरी प्रार्थना को स्वीकार करेंगे ऐसा उन्होंने विश्वास व्यक्त किया।

साध्वी प्रज्ञा जी के बाद डा. महावीर अग्रवाल तथा स्वामी आशुतोष जी के सम्बोधन भी हुए। इसके बाद साध्वी प्रज्ञा जी ने अपने व्रत व साधना के कुछ अनुभव सुनाये। इससे सम्बन्धित उपलब्ध सामग्री को हम आगामी कुछ लेखों के माध्यम से प्रस्तुत करेंगे। हमने प्रज्ञा जी का संक्षिप्त परिचय फेसबुक तथा व्हटशप के माध्यम से अपने मित्रों व कुछ ग्रुपों में प्रसारित किया था। बड़ी संख्या में लोगों ने इसे पसन्द किया है। कुछ लोगों ने फोन पर भी इस बारे में हमसे बात की। हम आशा करते हैं कि साध्वी प्रज्ञा जी भविष्य में वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

हम यह भी बता दें कि साध्वी प्रज्ञा जी की दो पुस्तकें हमें प्राप्त हुई हैं। एक पुस्तक का नाम ब्रह्मयज्ञ है। इस पुस्तक में ब्रह्मयज्ञ के मन्त्रों को सरस व प्रभावशाली कविताओं में प्रस्तुत किया गया है। उनके विभिन्न विषयों पर कविताओं का एक संग्रह ''काव्यधारा'' के नाम से प्रकाशित हुआ है। यह पुस्तक 185 पृष्ठों की है। उनकी एक कविता की चार पंक्तियां यहां नमूने के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं:

तन–मन–प्राण दिये ईश्वर ने, उसका ही गुणगान करो।

सर्वेश्वर को पाने हेतु, एक जन्म तो दान करो।।

एक बार तो परमेश्वर से अपना नाता जोड़ के देखो।

नश्वर जग के सारे बन्धन, एक बार तो तोड़ के देखो।।

हमें साध्वी प्रज्ञा जी का व्यक्तित्व अत्यन्त पावन एवं प्रभावशाली लगा। उनके व्यक्तित्व में दिव्यता व सरलता दृष्टिगोचर होती है। वह योग, ध्यान एवं वेदभक्ति सहित कविता में उच्च प्रतिभा से सम्पन्न हैं।

ओ३म्

वैदिक साधन आश्रम

तपोवन, नालापानी, देहरादून

द्वारा आयोजित

ग्रीष्मोत्सव

बुद्धवार, 12 मई 2021 से
रविवार, 16 मई 2021 तक

आर्य समाज के संस्थापक,
वेदों के उद्धारक एवं युग प्रवर्तक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

(1825-1883)

आश्रम सोसाइटी के सदस्यगण : दर्शन कुमार अग्निहोत्री, ई॰ प्रेम प्रकाश शर्मा, आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, सुधीर कुमार माटा, मंजीत सिंह, विक्रम बावा, योगेश मुंजाल, डॉ॰ शशि वर्मा, महेन्द्र सिंह चौहान, योगराज अरोड़ा, विजय कुमार, रामभज मदान, विनीश आहुजा, अशोक वर्मा एवं समस्त सदस्य वैदिक साधन आश्रम सोसायटी, देहरादून।

कार्यक्रम के प्रमुख सहयोगी : रणजीत राय कपूर, जीतेन्द्र तोमर, रमेश चन्द, सुशील कुमार भाटिया, कुलदीप सिंह चौहान।

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com Web : www.vaidicsadhanashramdehradun.com

ग्रीष्मोत्सव, योग साधना एवं अथर्ववेद यज्ञ

c'kk[k 'kDy ifrink l o'kk[k lfn prFkh foØeh lEor 2078 rd
rnuqlkj c/kokj 12 ebl l jfookj 16 ebl 2021 rd euk;k tk;sxkA

योग साधना निर्देशक	:	स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती
यज्ञ के ब्रह्मा	:	Lokeh eqäkuUn th ljLorh
वैदिक विद्वान	:	पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी, डॉ0 धन्नजय जी आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य, डॉ0 सुखदा सोलंकी जी, आचार्य डा0 अन्नपूर्णा जी, श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा जी, पं. सूरत राम शर्मा जी, पं. वेद वसु शास्त्री जी, योगाचार्य डॉ0 विनोद कुमार शर्मा जी, योगाचार्य श्री ओमप्रकाश मस्करा जी
वेद पाठ	:	श्रीमद दयानन्द आर्ष ज्योर्तिमठ गुरूकुल पौंधा के ब्रह्मचारियों द्वारा
यज्ञ तथा अन्य कार्यक्रमों के संचालक	:	पंडित सूरतराम शर्मा जी, श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी जी एवं डॉ. अनिल आर्य जी
भजनोपदेशक	:	श्री दिनेश आर्य पथिक जी, पं रूवेल सिंह आर्यमुनि जी, एवं श्रीमती मीनाक्षी पंवार जी

c/kokj 12 ebl l jfookj 16 ebl 2021 rd çfrfnu

योग साधना : प्रातः 5.00 से 6.00 बजे तक	यज्ञ एवं संध्या : सांयः 3.30 से 6.00 बजे तक
संध्या एवं यज्ञ : प्रातः 6.30 से 8.30 बजे तक	भजन एवं प्रवचन : रात्रि 07.30 से 09.30 बजे तक
भजन एवं प्रवचन : प्रातः 10 से 12 बजे तक	

c/kokj fnukad 12 ebl 2021

ध्वजारोहण	:	प्रातः 9:00 बजे। स्वामी आर्यवेश जी (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)
यज्ञ के यजमान	:	श्री विजय सचदेवा एवं परिवार
कार्यक्रम के अध्यक्ष	:	स्वामी आर्यवेश जी
भजन	:	श्री दिनेश आर्य पथिक जी, श्री रूवेल सिंह आर्यमुनि
प्रवचन विषय	:	lkekftd mUufr esa vk;l lekt dh Hkwfedk]
वक्ता प्रात सत्र	:	पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ, आचार्य आशीष जी
वक्ता सांयकाल सत्र	:	स्वामी मुक्तानन्द सरस्वती जी, श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी जी

x| : okj fnukd 13 eb 2021

कार्यक्रम के अध्यक्ष	:	प्रो0 डॉ0 सुनील कुमार जोशी (उपकुलपति उत्तराखण्ड़ आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय, देहरादून)
भजन	:	श्री दिनेश आर्य पथिक जी, पं. उम्मेद सिंह विशारद जी, श्री रमेश चन्द्र स्नेही जी,
प्रवचन विषय	:	'kkjhfjd mUufr d ofnd mik;
वक्ता प्रातः सत्र	:	योगाचार्य श्री ओमप्रकाश मस्करा जी, योगाचार्य डा0 विनोद कुमार शर्मा जी,
वक्ता सांयकाल सत्र	:	पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी, आचार्य डा0 धन्नजय जी,

'kØokj] fnukd 14 eb 2021

मुख्य अतिथि	:	श्रीमती बृजबाला यति जी एवं श्रीमती सुमन यति जी
कार्यक्रम की अध्यक्ष	:	श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा जी
भजन	:	श्रीमती मीनाक्षी पंवार जी एवं द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरूकुल की ब्रह्मचारिणियाँ
प्रवचन विषय	:	;okvk e u'k dh c<rh iofr] n"ifj.kke ,o lek/kku
वक्ता प्रातः सत्र	:	आचार्य डा0 अन्नपूर्णा जी, डा0 सुखदा सोलंकी जी, पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी
सांयकाल विषय	:	jk"V fuek.k e ukjh 'kfä dh Hkfedk
वक्ता सांयकाल सत्र	:	पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी एवं ब्रह्मचारिणी दीप्ति जी

'kfuokj] 15 eb 2021

कार्यक्रम के अध्यक्ष	:	स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी
भजन	:	श्री दिनेश आर्य पथिक जी, श्री रूवेल सिंह आर्यमुनि, श्री आजाद लहरी जी
प्रवचन विषय	:	ekuo thou e v/;kRe dk egRo
वक्ता प्रातः सत्र	:	स्वामी मुक्तानन्द जी, पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी, आचार्य आशीष जी
सांयकाल भजन संध्या	:	श्री दिनेश आर्य पथिक जी एवं श्रीमती मीनाक्षी पंवार जी

jfookj] 16 ebZ 2021

समापन समारोह	:	प्रातः 10:00 से 1:00 बजे तक
मुख्य अतिथि	:	Jh lqjs'k pUn vk;Z th ¼iz/kku lkoZnsf'kd lHkk½
विशिष्ट अतिथि	:	Jh nhu n;ky xqIrk th] dk;Zdrk
सभाध्यक्ष	:	Jh n'kZu dqekj vfXugks=h th
कार्यक्रम संचालक	:	डॉ. अनिल आर्य जी
अतिथियों का स्वागत	:	इं0 प्रेम प्रकाश शर्मा (सचिव तपोवन आश्रम),
भजन एवं प्रवचन	:	श्री दिनेश आर्य पथिक जी एवं द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरूकुल की ब्रह्मचारिणियों द्वारा भजन प्रस्तुति
प्रवचन विषय	:	jk"VªksRFkku esa vk;Z lekt dh iz klafxdrk ,oa ;ksxnku
वक्ता	:	पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ, स्वामी मुक्तानन्द जी सरस्वती, आचार्य आशीष जी, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी,डा0 अन्नपूर्णा जी
सम्बोधन	:	अतिथियों द्वारा सम्बोधन
धन्यवाद ज्ञापन	:	आश्रम के अध्यक्ष श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन
ऋषिलंगर	:	समापन समारोह के उपरान्त ऋषिलंगर की व्यवस्था

vkefU=r oSfnd fo}ku ,oa vfrfFkx.k

डॉ. नवदीप जी, डॉ. कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री जी, श्री मनमोहन आर्य जी, श्री एस. एस. वर्मा जी, श्री गोविन्द सिंह भण्डारी जी, श्री दयाकृष्ण कांडपाल जी, श्री ओमप्रकाश मलिक जी, श्री गणेशपति जी, श्री राजकुमार भण्डारी जी, श्री महावीर सिंह जी, श्री अतर सिंह जी, श्री अजय त्यागी जी, श्री धर्मपाल शर्मा जी, श्री तीरथ कुकरेजा जी, श्री संजय जैन जी, श्री पंकज त्यागी जी, श्री नरेन्द्र वर्मा जी, श्री रामपाल रोहिला जी, श्री अरविन्द शर्मा जी, श्री दयानन्द तिवारी जी, डॉ. बृजपाल आर्य जी, श्री नरेन्द्र साहनी जी, श्री ओमप्रकाश महेन्द्रू जी, श्रीमती कान्ता काम्बोज जी, श्री ज्ञानचन्द गुप्ता जी, श्री भगवान सिंह जी, श्री शत्रुघन कुमार मौर्य जी, श्री जीतेन्द्र सिंह तोमर जी, श्री महिपाल सिंह जी, श्री रमेश भारती जी, श्री उम्मेद सिंह विशारद जी, श्री रणजीत राय कपूर जी, श्रीमती ऊषा जी, डॉ. विश्वमित्र शास्त्री जी, श्री ओमप्रकाश जी, श्री मानपाल सिंह जी, श्री दिनेश आर्य जी, श्री हाकम सिंह जी, श्रीमती पुष्पा गुसाईं, श्री वेद प्रकाश धीमान जी, श्री प्रदीप दत्ता जी, श्री पी.डी. गुप्ता जी, श्री केसर सिंह जी, श्री रतन सिंह जी, श्री महिपाल सिंह त्यागी जी, श्री रामबाबू सैनी जी, श्री चमनलाल रामपाल जी, श्रीमती सविता अग्रवाल जी एवं सभी आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री एवं कोषाध्यक्ष

fuosnd

दर्शन कुमार अग्निहोत्री, ई. प्रेम प्रकाश शर्मा, आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, सुधीर कुमार माटा, मंजीत सिंह, विक्रम बावा, योगेश मुंजाल, अशोक वर्मा, डॉ. शशि वर्मा, महेन्द्र सिंह चौहान, योगराज अरोड़ा, विजय कुमार, रामभज मदान, विनीश आहूजा

,oa leLr lnL;] oSfnd lk/ku vkJe lkslkbVh

&ohj lkojdj th dh 138oha t;Urh &

देशभक्त, त्यागी एवं बलिदानी अद्वितीय परमवीर सावरकर जी

&eueksgu dqekj vk;Z] ngjknwu

देश की आजादी में वीर सावरकर जी का अद्वितीय योगदान है। वह ऋषि दयानन्द के भक्त व क्रान्तिकारियों के आद्य प्रेरणास्रोत पं0 श्यामजी कृष्ण वर्मा के शिष्य थे। लन्दन में रहकर उन्होंने कानून की पढ़ाई की और इसके साथ ही देश की आजादी के लिये क्रान्तिकारी गतिविधियों से भी जुड़े और महनीय कार्य किये। इसका परिणाम यह हुआ कि उन्हें लन्दन में गिरिफ्तार किया गया और उन पर मुकदमा चला कर उन्हें दो जन्मों के कारावास की सजा दी गई। यह आश्चर्य है कि यह सजा अंग्रेजों ने दी थी। यह अंग्रेज ईसाई थे और इनका धर्म ग्रन्थ व धार्मिक मान्यतायें दो जन्मों व पुनर्जन्म के सिद्धान्त को नहीं मानते। वीर सावरकर जी ने लगभग 10 वर्ष कालापानी अर्थात् पोर्टब्लेयर की सेलुलर जेल में बिताये जहां इन पर अमानुषिक अत्याचार किये गये। हमारा सौभाग्य है कि हमें पोर्टब्लेयर स्थित कालापानी वा सेलुलर जेल में जाने का अवसर मिला और हमने उनका वह कमरा जिसमें वह रहते थे, उसे देखा है। उन्हें न केवल कोल्हू में बैल की जगह स्वयं जुतकर तेल निकालना पड़ता था अपितु वहां का जेलर इन्हें कोड़ों से पीटकर यातनायें भी देता था। सेलुलर जेल में प्रतिदिन रात्रि समय आयोजित लाइट एण्ड साउण्ड शो को देखकर हृदय कांपने लगता है और आंखे गीली हो जाती हैं। वीर सावरकार जी ने कालापानी की जेल में रहते हुए अनेक यातनायें सही। उनका बलिदान स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है। आज उन्हें बदनाम करने के लिये कुछ राजनीतिक दलों को देखकर दुःख होता है। ऐसे लोग निहित राजनीतिक स्वार्थों व भारत विरोधी विदेशियों शक्तियों के इशारे पर हमारे देश के कुछ महापुरुषों को बदनाम करने के लिये ऐसा करते रहते हैं। ऐसे लोगों की निन्दा

ही की जा सकती है। जो लोग कभी देश के लिये कभी कहीं जेल में नहीं रहे, वह यदि वीर सावरकर जी की आलोचना करें तो निश्चय ही वह निन्दा के पात्र हैं। हमने अपने गुरु प्रो0 श्री अनूपसिंह जी से कई बार सुना था कि इंग्लैण्ड में भारत के युवाओं को जो कानून की पढ़ाई करते थे, उन्हें परीक्षा में पास होने पर भी शेष जीवन में अंग्रेजों के प्रति वफादार रहने की शपथ लेनी पड़ती थी। वीर सावरकर जी ने कानून की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर भी शपथ नहीं ली थी जिस कारण इन्हें कानून की उपाधि नहीं मिली थी जबकि देश के अन्य कुछ प्रसिद्ध नेताओं ने शपथ ली थी और इन्हें डिग्री प्रदान की गई थी।

वीर सावरकर जी ने जेल से छूटकर रत्नागिरी स्थान पर नजरबन्द रहते हुए वहां भी समाज सुधार सहित दलितोद्धार के कार्य किये। वीर सावरकर जी की नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जी से भी भेंट हुई थी और सावरकर जी ने ही उन्हें देश से बाहर जाकर देश को आजाद कराने की प्रेरणा

दी थी। इस अवसर का एक चित्र बहुत पहले आर्यजगत के एक विशेषांक में इसके प्रसिद्ध सम्पादक पं0 क्षितीज वेदालंकार जी ने प्रकाशित किया था। वीर सावरकर जी का यह योगदान कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं था। वीर सावरकर जी ने हिन्दुओं को संगठित करने व उन्हें भावी खतरों से भी सावधान किया था। उन्होंने अनेक पुस्तके लिखी हैं जिनमें से हमने कुछ पढ़ी हैं। मोपला विद्रोह एवं गोमांतक उपन्यास ग्रन्थ पढ़ने योग्य हैं। उनका एक अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थ सन् 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास है जिसें पढ़कर आजादी के इस आन्दोलन का सत्य इतिहास जानने को मिलता है। हमें इस ग्रन्थ को पढ़कर आश्चर्य हुआ कि लन्दन में बैठकर वहां के ग्रन्थालयों से कैसे वीर सावरकर जी ने सरकारी रिपोर्टों के आधार पर सामग्री एकत्रित की और एक विशाल एवं प्रामाणिक इतिहास की रचना की। यह भी बता दें कि इस पुस्तक के प्रकाशन से पूर्व ही इस पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। इस पर भी देशभक्तों द्वारा इस पुस्तक को किसी प्रकार छुपाकर भारत भेजा गया और यहां अंग्रेजों के शासन काल में ही इसका प्रकाशन हुआ। हमारे देश के अनेक क्रान्तिकारियों ने इस इतिहास से प्रेरणा लेकर देश की आजादी के आन्दोलन में अपना सर्वस्व अर्पण किया था। वर्तमान में यह पुस्तक सुलभ है। प्रत्येक देशभक्त नागरिक को इस पुस्तक को अवश्य पढ़ना चाहिये।

वीर सावरकर जी हिन्दू महासभा के प्रधान व उपप्रधान भी रहे। वह हिन्दुओं को संगठित करना चाहते थे। मुगलकाल में हिन्दुओं को जिस धर्मच्युत होने और अपमानित अवस्था से गुजरना पड़ा उसका कारण हिन्दुओं का असंगठन एवं धार्मिक व सामाजिक अन्धविश्वास, कुरीतियां वा कुप्रथायें आदि थी। जन्मना जातिवाद भी असंगठन का मुख्य कारण था। इसके विरुद्ध सबसे पहले ऋषि दयानन्द जी ने आवाज उठाई थी और अपने आचरण से जातिगत भेदभाव को दूर करने का सन्देश दिया था। उसके बाद ऋषि दयानन्द के अनुयायियों ने दलितोद्धार को अपना मिशन बना लिया था जिसके अनेक उदाहरण इतिहास में मिलते हैं। डॉ0 अम्बेडकर जी को ऋषि के एक अनुयायी ने ही छात्रवृत्ति देकर इंग्लैण्ड अध्ययन करने के लिये भेजा था। आर्यसमाज के एक विद्वान पं0 कुशलदेव शास्त्री जी ने डॉ0 अम्बेडकर और आर्यसमाज विषयक एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना भी की है जो कि पठनीय है। वीर सावरकर जी ऋषि दयानन्द जी के प्रशंसक थे। उन्होंने कहा है कि जब तक ऋषि दयानन्द जी का लिखा हुआ सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ धरती पर मौजूद है, कोई मत व उसका आचार्य अपने मत–मजहब की शेखी नहीं बघार सकता।

वीर सावरकर जी और उनके परिवार ने देश की आजादी के लिये जो कष्ट सहन किये हैं, उसकी अन्यत्र कोई उपमा नहीं है। जो लोग सत्ता में रहे हैं वा जिन्होंने सत्ता का सुख भोगा है, वह वीर सावरकर जी के साथ न्याय नहीं कर सकते। उनके लिये तो अपने हलके फुलके नेता ही सबसे महान होते हैं। दिनांक 28 मई 2021 को सावरकर जी की 138 वीं जयन्ती है। उनके जीवन की कुल अवधि 83 वर्षों की रही। उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए भारत की प्रसिद्ध गायिका लता मंगेश्कर जी ने कहा है 'नमस्कार! आज स्वातन्त्रय वीर सावरकर जी की जयन्ती है। मैं उनके व्यक्तित्व को, उनकी देशभक्ति को प्रणाम करती हूं। आजकल कुछ लोग सावरकरजी के विरोध में बातें करते हैं, पर वह लोग यह नहीं जानते कि सावरकर जी कितने बड़े देशभक्त और स्वाभिमानी थे।' भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने वीर सावरकर जी को श्रद्धांजलि देते हए कहा है "We bow to Veer Savarkar on his Jayanti. Veer Savarkar epitomises courage, patriotism and unflinching commitment to a strong India. He inspired many people to devote themselves towards nation building." हम पवमान परिवार की ओर से वीर सावरकर जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

वैदिक धर्म में तलाक नहीं हो सकता

¼osn dh lEefr esa ,d ckj ifr&iRuh :i esa ftldk gkFk idM+ fy;k] thou Hkj mlh dk gks dj jguk pkfg;s½

&dhfrZ'ks"k vkpk;Z fç;ozr osnokpLifr] gfj}kjA

वैदिक धर्म में तलाक की जगह नहीं हैं। वर–वधू को विवाह से पूर्व भली–भाँति देख–भाल और पड़ताल करके अपना साथी चुनने का आदेश दिया गया है – खूब अच्छी तरह परख कर अपना साथी चुनो। पर जब एक बार विवाह हो गया तो फिर विवाह टूट नहीं सकता – तलाक नहीं हो सकता। फिर तो एक दूसरे की कमी और दोषों को दूर करते हुए प्रेम और सहिष्णुता से गृहस्थ में रहो। एक पुरुष की एक ही पत्नी और एक स्त्री का एक ही पति होना चाहिये तथा विवाहित पति–पत्नी में कभी तलाक नहीं होना चाहिये। इस विषय पर प्रकाश डालने वाले वेद के कुछ स्थल पाठकों के अवलोकनार्थ यहाँ उद्धृत किये जाते हैं–

- अथर्ववेद (7.37.1) में पति से पत्नी कहती है – ''हे पति तुम मेरे ही रहो, अन्य नारियों का कभी चिन्तन भी मत करो।''
- अथर्ववेद (2.30.2) में पति पत्नी से कहता है – ''हे पत्नी ! तू मुझे ही चाहने वाली हो, तू मुझ से कभी अलग न हो।''
- अथर्ववेद के चौदहवें काण्ड और ऋग्वेद के दसवें मण्डल के 85 वें सूक्त में विवाह के समय नव वर–वधू को उपदेश दिया है कि – ''तुम दोनों पति–पत्नी सारी आयु भर इस विवाहित जीवन के बन्धन में स्थिर रहो, तुम कभी एक दूसरे को मत छोड़ो।''
- अथर्ववेद में वहीं चौदहवें काण्ड में (14.2.64) कहा है – ''ये नव विवाहित पति–पत्नी सारी आयु भर एक दूसरे के साथ इस प्रकार इकट्ठे रहें जिस प्रकार चकवा और चकवी सदा इकट्ठे रहते हैं।''
- ऋग्वेद (10.85.47) में विवाह के समय वर–वधू अपने आप को पूर्ण रूप से एक–दूसरे में मिला देने का संकल्प करते हुए कहते हैं – ''सब देवों ने हम दोनों के हृदयों को मिला कर इस प्रकार एक कर दिया है जिस प्रकार दो पात्रों के जल परस्पर मिला दिये जाने पर एक हो जाते हैं।''
- अथर्ववेद (14.1.50) में वर अपनी वधू को सम्बोधन कर के कहता है – ''हे पत्नि ! तू मुझ पति के साथ बुढ़ापे तक चलने वाली हो।'' ''हे पत्नि ! तू मुझ पति के साथ सौ वर्ष तक जीवित रह।'' (अथर्ववेद 14.1.52)

वेद के इन और ऐसे ही अन्य स्थलों में स्पष्ट रूप से प्रतिपादन किया गया है कि आदर्श स्थिति यह है कि एक स्त्री का एक पति और एक पुरुष की एक ही पत्नी रहनी चाहिये तथा उनमें कभी तलाक नहीं होना चाहिये।

विवाह वास्तव में वह दिव्य सम्बन्ध है जिस में दो व्यक्ति अपना हृदय एक–दूसरे को प्रदान कर देते हैं। हृदय एक ही बार और एक ही व्यक्ति को दिया जा सकता है। एक बार दिया हुआ हृदय फिर वापिस नहीं लिया जा सकता। इसीलिये वेद एक–पति और एक–पत्नी के व्रत का विधान करते हैं तथा तलाक का निषेध करते हैं। वेद की सम्मति में एक बार पति–पत्नी रूप में जिसका हाथ पकड़ लिया, जीवन भर उसी का हो कर रहना चाहिये। यदि एक–दूसरे में कोई दोष और त्रुटियां दीखने लगें तो उनसे खिन्न हो कर एक–दूसरे को छोड़ नहीं देना चाहिये। प्रत्युत स्नेह और सहानुभूति के साथ सहनशीलता की वृत्ति का परिचय देते हुए परस्पर के दोषों को सुधारने का प्रयत्न करते रहना चाहिये। जो दोष दूर ही न हो सकते हों उन के प्रति यह सोच कर

कि दोष किस में नहीं होते, उपेक्षा की वृत्ति धारण कर लेनी चाहिये। स्नेह और सहानुभूति से एक–दूसरे की कमियों को देखने पर वे कमियां परस्पर के परित्याग का हेतु कभी नहीं बनेंगी। इसी अभिप्राय से वैदिक विवाह संस्कार में वर–वधू मिल कर मन्त्र–ब्राह्मण के वाक्यों से कुछ आहुतियां देते हैं जिन का भावार्थ इस प्रकार हैं – ''तुम्हारी मांग में, तुम्हारी पलकों में, तुम्हारे रोमा आवर्तों में, तुम्हारे केशों में, देखने में, रोने में, तुम्हारे शील–स्वभाव में, बोलने में, हंसने में, रूप–काँति में, दाँतों में, हाथों और पैरों में, तुम्हारी जंघाओं में, पिंडलियों में, जोड़ों में, तुम्हारे सभी अङ्गों में कहीं भी जो कोई दोष, त्रुटि या बुराई है, मैं इस पूर्णाहुति के साथ उन सब तुम्हारी त्रुटियों और दोषों को शान्त करता हूं।'' विवाह संस्कार की समाप्ति पर ये वाक्य पढ़ कर आहुतियां दी जाती हैं। इन आहुतियों द्वारा वर–वधू यह संकल्प करते हैं कि हमने एक–दूसरे को उसके सारे गुण–दोषों के साथ ग्रहण किया है। हम एक–दूसरे के दोषों से खिन्न हो कर परस्पर झगड़ेंगे नहीं, और न ही कभी एक–दूसरे का परित्याग करने की सोचेंगे। हम तो विवाह–संस्कार की इन पूर्णाहुतियों के साथ यह संकल्प दृढ़ करते हैं कि हम सदा परस्पर के दोषों को स्नेह और सहानुभूति से सुधारने और सहने का प्रयत्न करते रहेंगे। विवाह से पहले हमने अपने साथी को इसलिये चुना था कि वह हमें अपने लिये सब से अधिक उपयुक्त और गुणी प्रतीत हुआ था। अब विवाह के पश्चात् हमारी मनोवृत्ति यह हो गई है कि क्योंकि मेरी पत्नी मेरी है और मेरा पति मेरा है, इसलिये मेरे लिये मेरी पत्नी सब से अधिक गुणवती है और मेरा पति मेरे लिये सब से अधिक गुणवान् है। अब हमारे हृदय मिल कर एक हो गये हैं। अब हमें एक–दूसरे के गुण ही दीखते हैं, अवगुण दीखते ही नहीं। और यदि कभी किसी को किसी में कोई दोष दीख भी जाता है तो उसे स्नेह और सहानुभूति से सह लिया जाता है तथा सुधारने का यत्न किया जाता है। विवाह की इन पूर्णाहुतियों में हमने ऐसा संकल्प दृढ़ कर लिया है और अपनी मनोवृत्ति ऐसी बना ली है। जब हमारे दिल और आत्मा एक हो गये हैं तो हमारा ध्यान आपस की ऊपरी शारीरिक त्रुटियों की ओर जा ही कैसे सकता है?

इस प्रकार वैदिक धर्म में न तो अनेक–पत्नी प्रथा (Polygamy) का स्थान है और न ही अनेक–पति प्रथा (Poliandry) का। इसके साथ वैदिक धर्म में तलाक का भी विधान नहीं है। यह ऊपर दिये गये वेद के प्रमाणों से अत्यंत स्पष्ट है।

(स्रोतः मेरा धर्म, प्रथम संस्करण 1957 ई., पृ. 15–18, प्रस्तुतकर्ताः भावेश मेरजा)

पवमान मासिक पत्रिका के सभी ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि जिन ग्राहकों ने पिछले कुछ महीने में पत्रिका का वार्षिक/आजीवन शुल्क ऑनलाइन फण्ड ट्रान्सफर के माध्यम से पवमान के कैनरा बैंक खाते में जमा किये है उन सबसे प्रार्थना है कि अपने जमा किये गये शुल्क की जानकारी आश्रम कार्यालय के दूरभाष–0135–2787001 पर सम्पर्क कर जरूर दें। आप अपने जमा किए गये शुल्क का विवरण मो0–7895978734 पर भी वाट्स–एप के माध्यम से भेज सकते हैं।

पत्रिका के अन्य ग्राहकों से भी अनुरोध है कि वे पिछली पत्रिकाओं में छपे विवरण के अनुसार पत्रिका का शुल्क शीघ्र–अतिशीघ्र आश्रम के कैनरा बैंक खाते, खाता संख्या–2162101021169, आई.एफ.एस. सी. कोड़–CNRB0002162, में जमा करने का कष्ट करें। धन्यवाद

राम राज्याभिषेक : स्वागत समारोह

&b'ojh ilkn ie th

भरत तथा प्रजा के आग्रह पर श्री राम ने जब राज्यभार उठाना स्वीकार कर लिया। तब सारे राष्ट्र में आनन्द–उल्लास के बाजे बजने लगे। थोड़े ही दिनों में राज्यभिषेक के लिए एक दिन निश्चित् कर दिया गया।

निश्चित दिन सब सामग्री एकत्र कर, ठीक समय पर रत्नों के आसन पर राम को बैठाया गया। फिर वशिष्ठ, विजय, जाबालि, काश्यप, कात्यायन, गौतम और वामदेव आदि ऋषियों के अतिरिक्त विशेष निमन्त्रण पर आये हुए महर्षि विश्वामित्र एवं महामुनि अगस्त्य और वाल्मीकि आदि ने सब प्रजाजनों की सम्मति से उनका राज्याभिषेक किया।

राज्याभिषेक की विधि सम्पन्न होने पर सम्पूर्ण प्रजाओं और माण्डलिक राजाओं ने अपने हृदय सम्राट् महाराज श्री राम के चरणों में अपनी भेंटें प्रस्तुत की। उदारमना श्रीराम ने भी सभी को यथायोग्य उपहार प्रदान करने के पश्चात् सम्पूर्ण ऋषि–मण्डल और अपनी तीनों माताओं की चरण स्पर्श पूर्वक अर्चना करते हुए विनय भरी वाणी में कहा–

''यह जो इतना बड़ा लोक संग्राहक राष्ट्र कार्य हो सका–देव राष्ट्र, आर्यराष्ट्र, वानर राष्ट्र और असुर राष्ट्र जो सर्वथा एकीभूत हो सके एकान्त भोगवाद और भौतिकवाद पर टिकी आसुरी सभ्यता का पूर्णतया निरसन होकर जो इन सभी राष्ट्रों में सर्वत्र एकमेव वैदिक संस्कृति का पवित्र ध्वज उत्तेलित किया जा सका, उसका मूल श्रेय हमारे ऋषि–मण्डल और विप्र वृन्द को है। हमारे जन्म के आरम्भ से लेकर आजतक हमारी सम्पूर्ण गतिविधियों के मूल संचालक हमारे ये देवगण ही रहे हैं। और यही हमारी सफलता का रहस्य है।

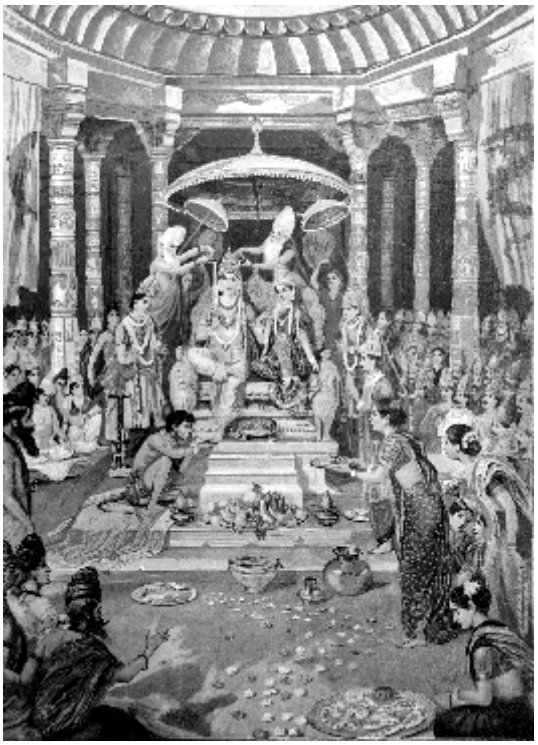

जिस राष्ट्र की ब्राह्म शक्ति जागरूक रहे, वेदमाता के शब्दों में उद्घोष करती है–''वयं राष्ट्र जागृयाम पुरोहिताः'' तथा जिस राष्ट्र की इन्द्र शक्ति(क्षात्र शक्ति) ब्राह्म शक्ति का अनुशासन स्वीकार करती है, वह राष्ट्र निश्चय ही विजयी और सफल होता है। अतः आज के हर्षोल्लासमय समारोह की बेला में पुनः–पुनः मैं अपने ऋषि मण्डल एवं विद्वत्मण्डल का अभिनन्दन करता हूँ। इस इतने दायित्व–पूर्ण पद पर जो मुझे प्रतिष्ठित किया गया है, सो मैंने तो गुरुदेव तथा सभी ऋषियों के आदेश का पालन मात्र किया है। इस वैदिक स्वराज के, इस सांस्कृतिक सम्राज्य के सच्चे शासक और संचालक तो ये मुनि वृन्द ही

हैं, मैं तो मात्र प्रतिनिधि या निमित्र मात्र ही हूँ। मुझे विश्वास है कि इनका वरद हस्त और स्नेहिल छाया मुझे कर्त्तव्यपालन की शक्ति देगी।''

श्री राम ने तब महाराज विभीषण, महाराज सुग्रीव, वीरवर नल–नील, युवराज अंगद और महामति जाम्बवान् के अतिरिक्त गज, गवाक्ष, गवय, शरभ, गन्धमादन आदि के उपकारों की विस्तार से चर्चा करते हुए सभी के प्रति बार–बार आभार प्रदर्शित किया। अन्त में महावीर हनुमान् का अलिंगन करते हुए वे बोले–''ये हैं अंजनीकुमार, पवनपुत्र, अखण्ड ब्रह्मचर्यव्रती, तपः पूत, परम वैदिक विद्वान, गदाधारी बज्रंगी महावीर हनुमान! वानर राष्ट्र के बिना मुकुट के सम्राट, युवा वानर वीरों के संक्रान्ति दल के नायक और महान् निर्माता, सेवा–धर्म के मुर्तिमान प्रतीक, महर्षि अगस्त्य के सम्पूर्ण जीवन की सबसे बडी पूँजी उनके अमर शिष्य हनुमान ही सच में इस विशाल सांस्कृतिक सम्राज्य के मूल संस्थापक हैं। इनका क्या धन्यवाद करूँ? कैसे करूँ, कहाँ तक करूँ–किन शब्दों में करूँ? अशक्य है वह तो। सत्य यह है कि मैं ही क्या सम्पूर्ण आर्यवर्त का एक–एक नागरिक महावीर के ऋण से अनृण नहीं हो सकता।

यह कहते–कहते श्रीराम के नेत्र हनुमान के उपकारों और सेवा साधनामय तप त्याग का स्मरण कर सजल हो उठे। इस प्रसंग में श्रीराम ने माता अंजना और महाराज पवन की तपस्या, महर्षि अगस्त्य की अद्भुत अखण्ड साधना आदि का संक्षेप भी प्रस्तुत किया।

पश्चात् भगवान् राम ने वानर वीरांगना दल की ओर संकेत कर उसकी संयोजिका देवी पद्मरागा की अनूठी तपश्चर्या की शत–मुख से वन्दना करते हुए बताया–''ये हैं महावीर हनुमान् की धर्म–बहिन, सेनाध्यक्ष नील की एकमात्र पुत्री देवी पद्मरागा, जिन्होने अपने धर्म–भाई हनुमान के अनुसरण में आजन्म बह्मचर्य व्रत की दीक्षा ले वीरांगना दल का निर्माण कर सम्पूर्ण वानर राष्ट्र के घर–घर में अलख जगा उसे महाशक्ति का रूप दिया है। भाई भरत, लक्ष्मण, शत्रुघन माताओं और देवि सीता का तप तो अकथ्य है। इस अवसर पर मैं सभी का अभिनन्दन करते हुए प्रजा–जनों का तो परम ऋणी हूँ जिन्होंने अपने इस तुच्छ सेवक को 14 वर्ष तक भुलाया नहीं है।''

अन्त में अखिल विघ्न–विनाशक परम पिता परमात्मा के धन्यवाद एवं स्तुति–गान पूर्वक श्री राम ने अपना आसन ग्रहण किया। महामहिम श्री राम के नेत्र कृतज्ञता भार से नत थे। वैदिक सांस्कृतिक साम्राज्य या राम–राज्य की स्थापना की ऋषियों की जीवनसाध आज पूर्ण हो गई थी। और इस सम्पूर्ण प्रसंग में ऋषि–मण्डल का सर्वथा मौन–भाव कितना मुखर था, कितना दर्शनीय था।

सर्दी जुकाम की सरल चिकित्सा

1. प्रातः काल पानी में दो–तीन अमरूद के पत्ते अथवा संतरे का छिलका उबालें। तीन–चार उबाल आने पर चीनी–पत्ती डालकर चाय बनाएं और धीरे–धीरे इसका सेवन करें। जुकाम को शीघ्र आराम होगा।
2. यदि हल्का या तेज बुखार है तो एक चम्मच अजवायन पतीले में भूनकर इसमें एक गिलास दूध डालकर ढक दें। कुछ देर बार उसमें मिश्री डालकर तीन–चार उबाल देकर सुहाता–सुहाता पीकर सो जाएं। बुखार भी खत्म हो जायेगा।
3. दो–तीन नींबू के छिलके बारीक–बारीक काटकर थोड़ा सा गुड़, अजवायन व काला नमक डालकर पकाएं। जब आधा पानी रह जाए तो गरम–गरम पिलाएं। सभी जुकाम खांसी का वेग समाप्त हो जायेगा।

आर्य समाज

&vk;l jfoUn: d|ekj

/kel vk/kkfjr vkJe&
मनुष्य जीवन को धर्मानुसार अधिक से अधिक उपयोगी, शुद्ध व संस्कारवान बनाने के उद्देश्य की पूर्ति के लिये चार आश्रमों में विभक्त किया गया है।

cãp;l vkJe&
ब्रह्मचारी का तात्पर्य होता है ब्रह्म की आज्ञा के अनुसार चलने वाला। जो परमेश्वर का सच्चा उपासक, वेदादि शास्त्रों को पढ़ने–पढ़ाने वाला तथा वीर्य की रक्षा करने वाला है वही बह्मचारी है। बह्मचारी का मुख्य लक्ष्य शारीरिक, मानसिक व आत्मिक शक्तियों का विकास करना है।

आत्मिक व शारीरिक उन्नति के लिये तथा विद्या और बल प्राप्त करने के लिये, मनुष्य को अपने जीवन के प्रथम भाग (जिसकी न्यूनतम अवधि पच्चीस वर्ष होनी चाहिये) को ब्रह्मचर्याश्रम में व्यतीत करना चाहिए। इस आश्रम में मनुष्य (स्त्री–पुरूष) को बह्मचर्य का पालन करते हुए, अपनी बाह्य इन्द्रियों व मन की वृत्तियों पर नियंत्रण कर, तपस्वी, सत्यवादी व धर्मानुष्ठान करते हुए वेदादि शास्त्रों सहित सभी विद्याओं का अध्ययन कर अपने शारीरिक व आत्मबल का संचय करना चाहिये। तत्पश्चात् ही द्वितीय आश्रम अर्थात् गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहिए।

x`gLFkkJe&
जीवन के इस आश्रम में मनुष्य को अपने हृदय, मन व बुद्धि को स्थिर रखते हुए गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहिये। इस सर्वश्रेष्ठ व सबसे महत्वपूर्ण आश्रम में पूर्ण दृढ़ता के साथ अपने तीनो गुरुओं (माता, पिता व आचार्य) से सहमति कर योग्य साथी के साथ मर्यादापूर्वक विवाह कर सन्तानोपत्ति करनी चाहिये तथा उनका ठीक प्रकार से लालन पालन तथा उनकी विद्या, ज्ञान व संस्कार–प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करना चाहिये।

तत्पश्चात् उसे धर्मानुकूल उद्यम करते हुए धन–संचय करना चाहिये तथा नित्य पंचमहायज्ञों का पालन व दान–धर्म करते हुए प्रीतिपूर्वक गृहस्थ जीवन को आनन्द करते हुए निर्वाह करना चाहिये। मनु महाराज ने कहा है,

lUrq"Vks Hkk;kZ;k Hkrkz Hk=kZ Hkk;kZ rFkSo pA
;fLeUuso dqys fuR;a dY;k.ka r= oS /kqoeAA
(मनु।३।६०)

अर्थात्–हे गृहस्थो! जिस कुल में भार्या से प्रसन्न पति और पति से भार्या सदा प्रसन्न रहती है, उसी कुल में निश्चित ही सब सौभाग्य और ऐश्वर्य निवास करते हैं। और जहां दोनों अप्रसन्न रहें तो उस कुल में नित्य कलह वास करता है।

okuizLFkkJe&
मनुष्य को अपने जीवन के ५१वें वर्ष में, अपने विवाहिक आनन्दमय जीवन के पच्चीस वर्ष व्यतीत करने के पश्चात् समस्त गृह तथा धन–सम्पति अपने ज्येष्ठ पुत्र को सोंपकर गृहस्थाश्रम से मुक्त होकर वानप्रस्थ ले लेना चाहिये। इस आश्रम में अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं के साथ तपस्वी जीवन व्यतीत करते हुए, विद्या का सम्पादन और सतकर्मों द्वारा जन सेवा करनी चाहिये।

lU;klkJe&
अपने जीवन के तीसरे भाग को वानप्रस्थ में व्यतीत करने के पश्चात् व जितेन्द्रिय होने पर, पचहत्तरवें वर्ष पर्यन्त संन्यास ले लेना चाहिये। इस आश्रम में संन्यासी अपने शेष जीवन को स्वाध्याय द्वारा ज्ञान–प्राप्ति तथा मन और आत्मा को स्थिर कर परमात्मा की स्तुति में लगावे। इसके साथ ही वह मानव–जन को ज्ञानोपदेश देते हुए अपना शेष जीवन समस्त राष्ट्र व जगत में भ्रमण करते हुए समाज के श्रेष्ठ कार्यों में व्यतीत करे। मन, वाणी, व कर्म से किसी से वैर न

करे, किसी का अपमान न करे तथा सब मन की पवित्रता से आचरण करें।

0;ogkfjd /keZ dk pkj y{k.k&

मनु महाराज ने व्यावहारिक धर्म का विस्तार करते हुए स्पष्ट किया है–

on% Lefr% lnkpkj% LoL; p fç;% vkReu%A
,rPprqfoZ/ka çkgq% lk{kk)eZL; y{k.keAA

(क) वेद–वेद ज्ञान अर्थात् ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद सभी धर्म के प्रकाशक हैं।

(ख) स्मृति–मनुस्मृति तथा अन्य सभी आर्ष स्मृतियां भी प्रमाण स्वरूप धर्म को प्रकाशित करती है।

(ग) सदाचार–सत् आचार अर्थात् जो मानवीय धरातल पर उत्तम आचरण युक्त व्यवहार किया जायें।

(घ) स्वात्मप्रियता–यह भाव सर्वोत्तम सहयोगी है। प्रत्येक व्यक्ति को दूसरे के साथ वैसा ही व्यवहार व प्रियता करना चाहिये जैसा वह स्वयं अपने लिये दूसरे से अपेक्षा करता है। अर्थात् जिस व्यवहार के मूल में ही बुराई हो व सर्वथा सर्वदा त्याज्य है।

इहलौकिक धर्म की सिद्धि के लिये मनुष्य को परिवारिक सम्बन्ध के कर्तव्य, सामाजिक सम्बन्ध के कर्तव्य तथा राष्ट्रीय सम्बन्ध के कर्तव्यों का पालन करना चाहिये।

पारलौकिक सुखों की सिद्धि के लिये मनुष्य को ईश्वरीय चिन्तन करके अपने गुण, कर्म, स्वभाव की क्षमता बढ़ाना, सत्य विद्याओं का सदा प्रचार करना, यज्ञादि अनुष्ठान में पूर्ण रूचि लेकर उत्तम अनुष्ठान को सम्पन्न करना, माता, पिता, भाई, बहिन, मित्रादि के साथ उच्च सम्बन्ध रखना, धन–धान्य, कोठी, नौकर–चाकर, राज आदि को प्राप्त करना तथा इन सबको उत्तम व्यवहार से संतुलित रखना, जो कल्याणार्थ समग्र उत्तम कर्म निःश्रेयस धर्म को पूर्ण करता है। यही सनातन धर्म है।

काला, पीला अथवा सफेद चोगा पहनना, कण्ठी–माला अथवा तावीज धारण करना, तिलक लगाना, जटा अथवा केश बढ़ाना इत्यादि धर्म के लक्षण नहीं हैं।

v/keZ vFkkZr~ vU;k;&

हमें अधर्म अर्थात् अन्याय पर भी विचार करना चाहिये। मनु महाराज ने लिखा है–

(क) मानसिक कर्मों में तीन मुख्य अधर्म हैं।

ijnzO;"ofHk/;kua eulkfu"VfpUrueA
forFkkfHkfuos'k'p f=fo/ka deZ ekulaeAA

(मनु।१२।५)

vFkkZr~

१. परद्रव्येष्वभिध्यानम्–परद्रव्यहरण अर्थात् दूसरो के पदार्थ चुराने की इच्छा रखना।

२. मनसानिष्टचिन्तम्–मन में ईर्ष्या–द्वेष रखना, दूसरों का बुरा चिन्तन करना।

३. वितध्याभिनिचवेश–मिथ्या अर्थात् गलत कार्य का निश्चय करना।

(ख) वाचिक अधर्म चार हैं।

Ikk#";eura pSo iS'kqU;a pkfi loZ'k%A
vlEc)izyki'p okÂ³e;a L;kPprqfoZ/keAA

(मनु।१२।६)

४. पारुष्य भाषण–कठोर भाषण करना अधर्म है। सब समय सबसे मृदु भाषण करना चाहिये।

५. अनृत भाषण–झूठ बोलना

६. पैशुन्य–चुगली करना।

७. असम्बद्ध प्रलाप–जानबूझ कर दूसरों की बात को उड़ाना।

(ग) शारीरिक अधर्म तीन हैं।

vnÙkkukeqiknkua fgalk pSokfo/kkur%A
ijnkjksilsok p 'kkjhja f=fo/ka leLrqeAA

(मनु।१२।७)

८. अदत्तानामुपादानम्–चोरी करना।

९. हिंसा–सब प्रकार के क्रूर कर्म करना अर्थात् हिंसा करना।

१०. परदारोपसेवा–वेश्याशीलन व व्यभिचारादि कर्म करना।

उपरोक्त वर्णीत लक्षणों से ही धर्म–अधर्म का निश्चय होता है।

उच्च रक्तचाप
(High Blood Pressure)

&MkO Hkxoku nkl

हमारे शरीर के सभी अंगों में रक्त हृदय से पंप होकर धमनियों, इसकी शाखाओं और असंख्य कोशिकाओं के माध्यम से पहुंचता है। जब हृदय सिकुड़ता है तो रक्त बलपूर्वक धमनियों में जाता है। इस प्रकार यह रक्त धमनियों की दीवारों पर धनात्मक दाब डालता है। जब हृदय फैलता है, तो धमनियों में रक्त का यह दाब कम हो जाता है और एक प्रकार की ऋणात्मक या नकारात्मक दाब बनता है। धमनियों की दीवारों पर पड़ने वाला रक्त का यह दोनों प्रकार का दाब ही रक्तचाप कहलाता है। इन धमनियों की दीवारें लचीली होती हैं। अतः ये धनात्मक और ऋणात्मक दोनों ही प्रकार के दाबों के अनुसार अपने आप को ढाल लेती हैं। हृदय की सिकुड़न के दौरान धमनियों की दीवारों पर जो धनात्मक दाब पड़ता है, उसे प्रकुंचन या सिस्टोलिक दाब कहते हैं। और हृदय के फैलने के दौरान जो दबाव पड़ता है, उसे अनुशिथिलन या डायस्टोलिक दाब कहते हैं।

साधारणतः प्रत्येक व्यक्ति की आयु, लिंग, शारीरिक श्रम और मानसिक कार्य के आधार पर रक्त का दाब अथवा रक्तचाप भिन्न–भिन्न होता है। जैसे–ऐसे पुरुष, जिनकी वृद्धावस्था है तथा जो शारीरिक और मानसिक श्रम अधिक करते हैं, उनका रक्तचाप दूसरे पुरुषों और स्त्रियों की अपेक्षा अधिक होता है। शरीर–विज्ञान के आधार पर भय, क्रोध, उत्सुकता और व्याग्रता के समय रक्त का दाब भी बढ़ जाता है। जबकि सोते समय तथा विश्राम के समय यह रक्तचाप अपने आप कम हो जाता है।

ऊपर बताए गए मानसिक और आवेशात्मक कारणों के अतिरिक्त वायु के प्रकोप के कारण भी

रक्तचाप बढ़ जाता है। इस वायु के प्रकोप के लिए मानसिक और शारीरिक तथ्यों के अतिरिक्त ऋतु का प्रभाव भी बहुत सीमा तक जिम्मेदार है। नमक का अधिक मात्रा में सेवन, शारीरिक कार्य या व्यायाम की कमी, मानसिक चिंता, नींद न आना व गुर्दे के रोग भी रक्तचाप में बढ़ोतरी के कुछ प्रमुख कारण हैं। वृद्धावस्था में, विशेषतया जब व्यक्ति के गुर्दों में कोई विकार आ जाता है, तब रक्तचाप भी बढ़ जाता है। इसका कारण यह है कि गुर्दों में विकार के कारण धमनियों की दीवारों में स्थित पेशियों के समूह में लवण एकत्र हो जाते हैं। इससे उनका लचीलापन कम हो जाता है। इस कारण हृदय की तरफ से पड़नेवाला बहुत थोड़ा–सा बल भी उन पेशियों पर अधिक दबाव डालने लगता है, जिससे रक्तचाप बढ़ जाता है।

रक्तचाप अधिक होने से व्यक्ति रात में ठीक प्रकार सो नहीं पाता। उसमें धड़कन, चक्कर आना, अस्थिरता या चंचलता, संतुलन की कमी, थोड़ा–सा परिश्रम करने पर सांस फूलना, कमजोरी और पाचन से संबंधित विकार देखे जाते हैं। जब उक्त रक्तचाप का रोग पुराना जो जाता है, तो रक्तवाहिकाओं में लचीलापन कम

होने के कारण, आंखों, खासकर रेटिना की ओर रक्त ले जानेवाली कोशिकाओं पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे आंखों की रेटिना में रक्तस्राव होने लगता है और आंखों की रोशनी में कमी या अन्य कई विकार आ जाते हैं। जब रक्तचाप इसके बाद भी बढ़ा हुआ रहता है, तो इसका कुप्रभाव मस्तिष्क को रक्त पहुंचानेवाली धमनियों पर पड़ता है। लचीलापन कम होने के कारण ये धमनियां अथवा कोशिकाएं फट सकती हैं, जिससे रक्तस्राव हो सकता है। इस स्थिति को सामान्य तौर पर प्रमस्तिष्क रक्तस्राव या सेरिब्रल हैमरेज के नाम से जाना जाता है। इसके परिणामस्वरूप अर्धांग या अंगघात (Paralysis) की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यह तो सब जानते हैं कि शरीर के अधिकतर अंगों के केन्द्र मस्तिष्क में ही स्थित हैं। ये केन्द्र ही इन सब अंगों के कार्यों का नियंत्रण करते हैं। मस्तिष्क में होनेवाले रक्तस्राव के कारण जो केन्द्र प्रभावित होता है, उस केन्द्र से संबंधित अंग में कोई विकार आ जाता है या वह अंग मारा जाता है। अर्थात् वह अंग कार्य करने के योग्य नहीं रहता।

mipkj

उच्च रक्तचाप की दशा में वे सभी औषधियां उपयोगी हैं जो वायु को शांत करती हैं और तंत्रिका तंत्र को शक्ति प्रदान करती हैं। इस दृष्टि से लहसुन बहुत उत्तम औषधि–द्रव्य है। वैसे कच्चा लहसुन लेने से शरीर में गर्म प्रभाव उत्पन्न होते हैं। परन्तु जब यही लहसुन पीसकर पेस्ट के रूप में लस्सी के साथ मिलाकर लिया जाता है, तो इस रोग की चिकित्सा में बहुत लाभदायक सिद्ध होता है। इसे लगभग एक ग्राम की मात्रा में देना आरंभ करना चाहिए और दिन में तीन बार देना चाहिए। धीरे–धीरे इसकी मात्रा बढ़ाकर तीन ग्राम तक कर देनी चाहिए। लहसुन की औषधि के रूप में ग्रहण करने की एक दूसरी विधि है–लहसुन को घी के साथ भूनकर लेना। इससे इसकी गंध तो कम हो ही जाती है तथा यह खाने में रूचिकर भी हो जाता है। यह दूसरी विधि अधिक लोकप्रिय है।

उच्च रक्तचाप को कम करने के लिए अधिकतर आयुर्वेद चिकित्सक सर्पगंधा नामक औषधि का प्रयोग करते हैं। एलोपैथी चिकित्सा पद्धति में भी इस औषधि का प्रयोग बहुतायत से किया जाता है। इस औषधि–द्रव्य में से अनेक ऐल्केलॉइड पृथक् किये गए हैं और उन्हें परीक्षणों के द्वारा रक्तचाप कम करने में बहुत प्रभावकारी माना गया है। परंतु आयुर्वेदीय चिकित्सा–पद्धति में इस द्रव्य की पूरी जड़ को ही इसके कच्चे या मूल रूप में प्रयोग में लाया जाता है। इस जड़ का चूर्ण बनाकर एक वयस्क को आधे छोटे चम्मच की मात्रा में दिन में तीन बार सेवन कराया जाता है। इस द्रव्य की गोलियां भी बनाई जाती हैं। गोलियां बनाने के लिए इसका जलीय सत्व निकाल कर उसे घना किया जाता है। इसमें से गोलियां बनाकर सुखा ली जाती हैं। ये गोलियां दिन में तीन बार दो–दो की मात्रा में सेवन कराई जा सकती हैं। इस संपूर्ण जड़ के चूर्ण और जलीय सत्व से तैयार गोलियों के सेवन से किसी प्रकार की हानि अथवा विकार प्रकट नहीं देखे गए। जबकि इस औषधि में से अलग किये गए केवल ऐल्केलाइड्स का प्रयोग यदि लंबे समय तक किया जाता रहे, तो ये शरीर पर हानिकारक प्रभाव डालना प्रारंभ कर देते हैं।

उच्च रक्तचाप का रोग जब बहुत पुराना हो जाता है, तो ऐसे रोगी के लिए धारा चिकित्सा सबसे अधिक लाभदायक मानी गई है। इस चिकित्सा में बला और दूध के साथ पकाए गए औषधीय तेल का प्रयोग किया जाता है जिसे क्षीर बला तैल कहा जाता है। इस तेल को मिट्टी के एक बर्तन में डाला जाता है। यह बर्तन एक ऊंचे खंभे या घर की छत के साथ बांधकर लटका दिया जाता है और रोगी को कमर के बल जमीन पर लिटा दिया जाता है। तेल के बर्तन की तली में छोटा–सा छेद बनाकर उस तेल की बूंदें रोगी के

माथे पर, दोनों भौंहों के बीच टपकानी होती हैं। यह क्रिया प्रतिदिन एक बार, लगभग आधे घंटे तक करनी चाहिए। प्रातःकाल की जाए तो अच्छा है। इस चिकित्सा के द्वारा रोगी रात को गहरी नींद में सो जाता है और रक्तचाप भी धीरे–धीरे कम होने लगता है। इसी तेल से रोगी के सिर और शरीर पर भी मालिश करनी चाहिए। जब यह तेल बला और दूध के साथ सौ बार पकाया जाता है, तो इसे शतवर्तित क्षीरबला तैल कहा जाता है। इस तेल की पांच बूंदें एक कप दूध में मिलाकर रोगी को प्रतिदिन पिलानी चाहिए। यह तेल रक्तचाप कम करने के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होता है।

vkgkj

उच्च रक्तचाप के रोगी को गर्म और मसालेदार खाद्य–पदार्थों का सेवन नहीं करना चहिए। जहां तक हो सके, नमक का प्रयोग कम–से–कम ही करना चाहिए। हाइड्रोजनीकृत तेलों के सेवन से तो पूरी तरह बचकर रहना चाहिए। गाय के दूध से बने घी और मक्खन का सेवन तो रोगी को निशंक होकर कराया जा सकता है। भैंस के दूध से मक्खन और घी ऐसे रोगी के लिए ठीक नहीं है। रोगी को ऐसी सब्जियों का सेवन करना चाहिए, जिनसे पेट साफ होने में सहायता मिले। करेला, सहिजन की फलियां, परवल और बिंबी जैसी सब्जियां रोगी के लिए बहुत लाभकारी हैं। अरबी और पीला सीताफल (पेठा) हानिकारक हैं, अतः इनका सेवन नहीं करना चाहिए। संतरा, केला, अमरूद और सेब इस रोगी के लिए बहुत लाभदायक माने गए हैं। रोगी सभी प्रकार के सूखे मेवों का सेवन कर सकता है। बादाम रोगन एक चम्मच की मात्रा में, रात को सोते समय एक प्याला गर्म दूध में डालकर देना चाहिए। बादामरोगन को नाक में डालकर नसवार भी दी जा सकती है। इससे नाड़ियों में मुलायमपन और चिकनाहट आती है, जो रक्तचाप कम करने में सहायक है। उच्च रक्तचाप से पीड़ित रोगी के लिए अनाज और दालों की अपेक्षा फलों और सब्जियों का प्रयोग अधिक उपयोगी माना गया हैं

vU; vkpkj&0;ogkj

उच्च रक्तचाप के रोगी को रात्रि में समय अधिक देर तक नहीं जागने देना चाहिए। जहां तक हो सके, उसे आराम करना चाहिए। किसी भी तरह की मानसिक परेशानी से बचना चाहिए। वह हल्का और थोड़ी मात्रा में शारीरिक कार्य तो कर सकता है, परन्तु भारी और थका देनेवाले शारीरिक कार्यों और बोझ आदि उठाने से बचना चाहिए। उसे नियमित समय और नियमित रूप से भोजन करना चाहिए। शौच क्रिया भी नियमित रूप सम्पन्न करना आवश्यक है। मानसिक शांति और संतुलन बनाए रखने के लिए कुछ समय ईश्वर की प्रार्थना में अवश्च व्यतीत करना चाहिए।

संसार में मानव के सुख–दुख के तीन ही कारण हैः भोग, रोग और शोक

ये ही तीन हमारे मानसिक,शारीरिक और आध्यात्मिकता के दुश्मन हैं अर्थात् त्याग, साधना और उपासना से यही हमको वंचित कर रहे हैं। अतः कुछ प्रकृति पदत्त नियमों का पालन करने से हम रोगों से बचे रहते हैं तथा मानसिक और सामाजिक संतुलन रखने से शोक से बचे रहते हैं। जब हम किसी से अति अपेक्षा करते हैं परन्तु किसी कारणवश वह हमें प्राप्त न हो तो हम उपेक्षा के शिकार हो जाते हैं।

हमें याद रखना चाहिए कि संसार में हम अकेले ही आये हैं और अकेले ही जाना है। हमें अपने सांसारिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए मोक्ष मार्ग के लिए तैयारी करनी है। यही मानव जीवन का लक्ष्य है। आईये वेदों का मार्ग अपनाकर अपवर्ग के लिए प्रयास करें।

श्रेष्ठता का चिह्न

&ohrjkx egkRek iHkq vkfJr th egkjkt

१. पशु वन से, शूद्र तन से, किसान अन्न से, व्यापारी धन से, क्षत्रिय फन (कौशल) से, राजा जन से, ब्राह्मण मन से श्रेष्ठ और बड़ा गिना जाता है और सभी अपनी वस्तुओं की रक्षा करने और उनके बढ़ाए रखने से आदर पाते हैं। जिसमें जो वस्तु नहीं, उसका मान और आदर न होगा।

२. जिसने धन कमाना है, उसे मन की क्या? और जिसने मन बनाना है, उसे धन की क्या चाह? दोनों का उल्टा ही रहा।

i.dk'k;Dr eu] Hk; jfgr vkfn ,d&vUr ,d ,dkUr

वाह रे मन! वाह! छोटे–छोटे जन्तुओं की खड़खड़ाहट से भयभीत होता है। क्या हुआ यदि अन्धेरा है? जब तू बैठा ही प्रभुआश्रित होकर है, फिर डरता है किससे, नन्हे–नन्हे जन्तुओं की खड़–खड़ से? जो प्रभुआश्रित होते हैं, वे तो संसार के कोलाहल, बादल की गरज, बिजली की कड़क, तोप और बन्दूक के धमाके से भी नहीं घबराते। इतने में तेरा हृदय धड़क गया, तो तू वन में कैसे गुजारेगा?

Hk; dk dkj.k

यह सब कमी अन्धेरे की है, बाह्य अन्धकार की नहीं, तेरे अपने आन्तिरिक अन्धकार की है। यदि अन्दर तुझे प्रकाश होता, तो खड़खड़ाहट भी तेरे कानों में न पहुंच सकती। देखा नहीं? सूर्य के प्रकाश में संसार में कितना बड़ा कोलाहल होता है, पर वह किसी के काम में बाधक नहीं होता। भाव यह है कि जैसे किसी को ध्वनि सुनाई नहीं देती। नही तो कारखाने के घुग्घू ही जीवन दूभर कर देते। जब ही प्रकाश विदा हुआ, अब रात्रि में दूर–दूर से ध्वनि कान में पहुंच रही है, जैसे कोई पास बोल रहा हो। बस सारी बात प्रकाश के अभाव की है। प्रभु आश्रित बनना, प्रभु आश्रित कहलाना–सहज कार्य नहीं। पहले आन्तिरिक प्रकाश प्राप्त करो–फिर यहां रहो। जहां जाओ–कहीं अन्धकार दृष्टिगत नहीं होगा। न कोई जीव जन्तु सताएगा।

lEcks/ku

अरे मन! बैठा तो है एकान्त में, बातें करता है ठगों की। यदि अब भी वैसी सूझती है, तो पहले जैसा बन जा। क्या तू समझता है तेरी इन कुवासनाओं को कोई नहीं सुन रहा, या कोई नहीं देख रहा? नगरवालों की करतूतों को नगरवाले देख लेते हैं और नगरवाले सुन लेते हैं और एकान्त वालों की करतूतों को जो आदि में एक, और अन्त में भी एक है, वही देखता है–और सुनता है। तेरे द्वार बन्द हैं–उसके तो बन्द नहीं? तूने अपनी आंखे मूंदी हुई है–उसने तो नहीं मूंदी हुईं? तू कभी–कभी खोलता है, उसकी अनादिकाल से खुली रहती हैं। एकान्त में बैठना है तो एक का हो रहो। यह मन, यह हृदय एक का ही रह सकता है, चाहे विषयों का हो रहे, चाहे वशी का(जो सबको वश में रखने वाला है), परमात्मा का हो रहे।

vkj lk/kkj.k jgs

ऐ मन! अब तो बड़ी नाजुक अवस्था है तेरी, जरा भी गिरा तो चकनाचूर हो जाएगा। इतना जप, तप, व्रत, ध्यान, ज्ञान, ईमान, यज्ञ–याग कौड़ी मूल्य के बदले नष्ट कर बैठोगे और अपनी भी एक अधेला कीमत न रहेगी। भूलकर रोटी भी कोई न पूछेगा। यह मत समझ कि बड़े–बड़े साधु थोड़ा पाप कर लेते हैं तो उनका कोई बिगाड़ नहीं होता। नहीं–नहीं, पर्वत पर चढ़ने वाले की, अथवा चढ़े हुए की दृष्टि जरा दूसरी ओर हुई, पांव खिसका, और धड़ाम से नीचे गिर पड़ा और हड्डी पसली टूट गई। ऊपर चढ़ने वाले को तो

नीचे भी देखने में भय लगता है, प्राण निकलते हैं। भया! यह मार्ग—यात्रा समतल भूमि की नहीं कि पांव फिसलेगा तो वहीं रहेगा। सब से ऊपर की भूमिका(मंजिल) तो पर्वत—शिखर की होती है। पत्थर की तरह मन दृढ़ अडोल बनकर चढ़ाई कर।

?kj dh lqf/k yks

अपने घर की सुधि शीघ्र मिल सकती है या दूसरे के घर की? सामान्य उत्तर तो यही मिलता है कि अपने घर की। पर संसार में उलट ही है। सब किसी को दूसरे के घरों के चोरों का शीघ्र पता लगता है, अपने घर के चोर का पता ही नहीं। भौतिक में तो अपना और पराया घर ही दीखते हैं, दैविक में सब घर देव के दीखते हैं। आध्यात्मिक अवस्था में सब घर अपने ही अपने दीखते हैं।

ue jgks

अन्धेरी, तूफान बड़े विशाल वृक्षों को, जिनका सिरा अभिमान से आकाश से बातें करता है, जड़ से उखाड़ कर फेंक देता है, पर छोटे से छोटे घास को कुछ भी नहीं कहता, जिसने पहले ही से नम्रता धारी हुई है।

tM+ ls tqM+s jgks

जब घास भी अपने स्रोत जड़ से पृथक् हो जावे तो साधारण सी वायु भी उसे दूर फेंक देती है।

योगश्वर महाराज दयानन्द

&ikO jktsUnz ^ftKklq**

gqxyh vkxeu dk dqN iqjkuk iz'u

कलकत्ता के एक पूर्व न्यायाधीश श्री मोहिनीमोहन दत्त ने ऋषि दयानन्द के हुगली आगमन विषयक अपने संस्मरण एक पत्र में दिये थे। ऋषिजी 1 अप्रैल 1873 को हुगली पधारें थे। आपने लिखा है कि ऋषि एक मन्दिर के ऊँचे चबूतरे पर विराजमान थे। मन्दिर की सीढियाँ नीचे भागीरथी में समाप्त होती थी। श्री दत्त दो मित्रों के साथ सांयकाल के समय उस ओर भ्रमण को निकले। वहाँ चबूतरे के समीप लोगों की भारी भीड़ देखी। आपने लिखा है, ''जो कुछ हमने देखा, उससे हम पर भी कुछ समय के लिए एक जादू का—सा प्रभाव पड़ा। जब कुछ अंधेरा अधिक हुआ तो भीड़ कुछ छटने लगी तथापि हम चबूतरे के समीप मन्दिर के एक कोने खड़े रहे। महर्षि की दृष्टि हम तीनों युवकों पर पड़ी। उन्होंने संकेत करके हमें अपने पास बुलाया। हम तीनों मित्र उनके निकट गये। कुछ समय के लिए जिह्वा ने साथ न दिया। बोलने की शक्ति लुप्त हो गई, मानो कि हम गूंगे हो गए हैं।''

''अन्त में हममें से एक ने, जो सबसे अधिक चतुर और बड़ा चंचल था, बड़े व्यंग से ऋषिजी को हितोपदेश से संस्कृत का एक वचन सुनाया। ऋषि इसे सुनकर मुस्काये और खिले माथे उस तरुण का हाथ पकड़कर अपने समीप बिठाया।''

इससे पता चलता है कि उस महात्मा का हृदय कितना सहानुभूतिपूर्ण, उदार व विशाल था। वे चरित्र पर उपदेश देने लगे। उनकी शैली ऐसी अद्वितीय, दिल को छूनेवाली, इतनी सुमधुर व प्रभावशाली थी कि हमारे मित्र की सब कटुता व अभिमान एकदम नष्ट हो गया। ज्ञान का अभिमान व पूछनेवाली भावना का लोप हो गया। हृदय ऐसा पिघला कि ऋषि की पवित्र चरणधूलि को सिर पर लगा लिया। इस प्रकार ऋषिजी से हमारी जान पहचान हुई।

if.Mr rkjkpj.k ls 'kkL=kFkZ

श्री दत्त ने पण्डित ताराचरण के साथ ऋषि के

हुगली शास्त्रार्थ के बारे में लिखा है, महर्षि यहाँ भी अकेले ही थे, जैसे काशी में थे। वह लिखते हैं, ''शास्त्रार्थ बराबर का नहीं था, कारण ताराचरण तर्क रत्न में न तो ऋषि दयानन्द जैसी योग्यता तथा विद्वत्ता थी और न ही महर्षि दयानन्द जैसा वाणी का बल था। इस शास्त्रार्थ में बाबू भूदेवजी, बाबू, श्री अक्षयन्द्र सरकार तथा पादरी लालबिहारी दे सरीखे प्रतिष्ठित महानुभाव उपस्थित थे।''

lc iek.k d.BLFk Fk

श्री दत्त लिखते हैं कि महर्षि को वेद, शास्त्र, रामायण, महाभारत, स्मृतियों आदि सबके प्रमाण कण्ठस्थ थे। उन्हें पुस्तक देखने की आवश्यकता ही नहीं थी। वे अपनी स्मरणशक्ति के भरोसे मन्त्र व श्लोक उद्धृत कर देते थे।

किसी को सामने आने का साहस न था श्री दत्त ने लिखा है कि सज्जन लोग उनके दर्शनार्थ आते रहते थे। उनके दरबार में भीड़ लगी रहती थी। जिन्हें अपने शास्त्र ज्ञान व संस्कृतज्ञ होने का अभिमान था, उनमें से किसी को भी उनके सामने आकर शास्त्रार्थ करने का साहस नहीं होता था।

egf"kZ dh lgu'khyrk&mudh egkurk

हम पहले लिख चुके हैं मार्च सन् 1877 को ऋषि का मेला चाँदापुर उ0प्र0 में ईसाई पादरियों व मुस्लिम मौलवियों से एक ऐताहासिक शास्त्रार्थ हुआ था। यह प्रथम अवसर था कि आर्यजाति के किसी विद्वान ने सैमेटिक मतों को शास्त्रार्थ करने की खुली चुनौती दी।

इस शास्त्रार्थ में पादरी स्काट ने स्वपक्ष में बोलते हुए कहा, ''प्रभु ईसामसीह जिस देश में गये, अर्थात् उनकी शिक्षा जहाँ–जहाँ गई है, वहाँ–वहाँ मनुष्य पापों से बचते जाते हैं। देखो इस समय सिवाय ईसाइयों के और किसी के मत में भलाई और अच्छे गुणों की उन्नति नहीं है। मैं एक दृष्टान्त देता हूँ कि जैसे पण्डित जी (ऋषि दयानन्द जी की ओर संकेत) बलवान हैं, ऐसे ही इंग्लिस्तान में एक मनुष्य बलवान् था। परन्तु वह मद्यपान, चोरी, व्यभिचार आदि बुरे काम करता था। जब वह ईसामसीह पर विश्वास लाया तब सब बुराइयों से छूट गया और बुरे कामों से बच गया।''

महर्षि के ब्रह्मचर्य से तपे शरीर को एक मद्यपि, व्यभिचारी व चोर के शरीर से उपमा देकर पादरी स्काट ने कैसा अशोभनीय व्यवहार किया। ऋषिजी ने अपनी बारी पर बोलते हुए इस घटिया कटाक्ष के विषय में बड़ी उदारता से केवल इतना ही कहा, ''और आप लोगों में जितना सुधार है सो मत के कारण नहीं, किन्तु पार्लियामेन्ट आदि के उत्तम प्रबन्ध से है, जो ये न रहें, मत से कुछ भी सुधार न हो। और पादरी साहब ने जो इग्लिस्तान के दुष्ट मनुष्य का दृष्टान्त मेरा साथ मिलाकर दिया, सो इस प्रकार कहना उनको योग्य न था। परन्तु न जाने किस प्रकार से यह बात भूल से उनके मुख से निकली।''

बस, इससे अधिक आपने इस विषय में कुछ भी न कहा। सहनशीलता का इससे बड़ा उदाहरण कोई क्या दे सकता है? हृदय की उदारता और विशालता तो देखिए कि कितने प्यार भरे शब्दों में प्रतिपक्षी कटाक्षकर्त्ता को कहा ''इस प्रकार कहना उनको योग्य न था।''

इससे भी बढ़कर क्षमा व उदारता का परिचय कोई क्या देगा कि ऋषि स्काट को क्षमादान देते हुए कहते हुए कहते हैं, ''न जाने किस प्रकार से यह बात भूल से उनके मुख से निकली।''

ऋषि के जीवन की एक–एक घटना आत्मोन्निति की चाह रखने वालों के लिए एक बहुत बड़ा उपदेश है। ऋषिजी ने वेद की ऋचाओं को ईश्वर की आज्ञाओं को जीवन में उतारने का सफल प्रयास किया। उनके जीवन की घटनायें, उनके जीवन के प्रेरक प्रसंग मानो वेद की बोलती ऋचायें हैं। हम अपने पाठकों से कहेंगे कि वे जीवन–निर्माण व उत्थान के लिए वर्ष में एक दो बार पं0 लेखरामजी अथवा देवेन्द्र बाबू लिखित ऋषि जीवन का पारायण अवश्य किया करें।

MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

TPM Certified

ISO / TS - 16949 - 2002 Certified

ISO - 14001 Certified

OHSAS - 18001 Certified

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बर्स बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर/फोर व्हीलर उद्योगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लॉट हैं – गुड़गाँव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

हमारे उत्पाद

- स्ट्रट्स/गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्कस
- गैस स्प्रिंगस/विन्डो बैलेन्सर्स

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुड़गाँव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL SHOWA

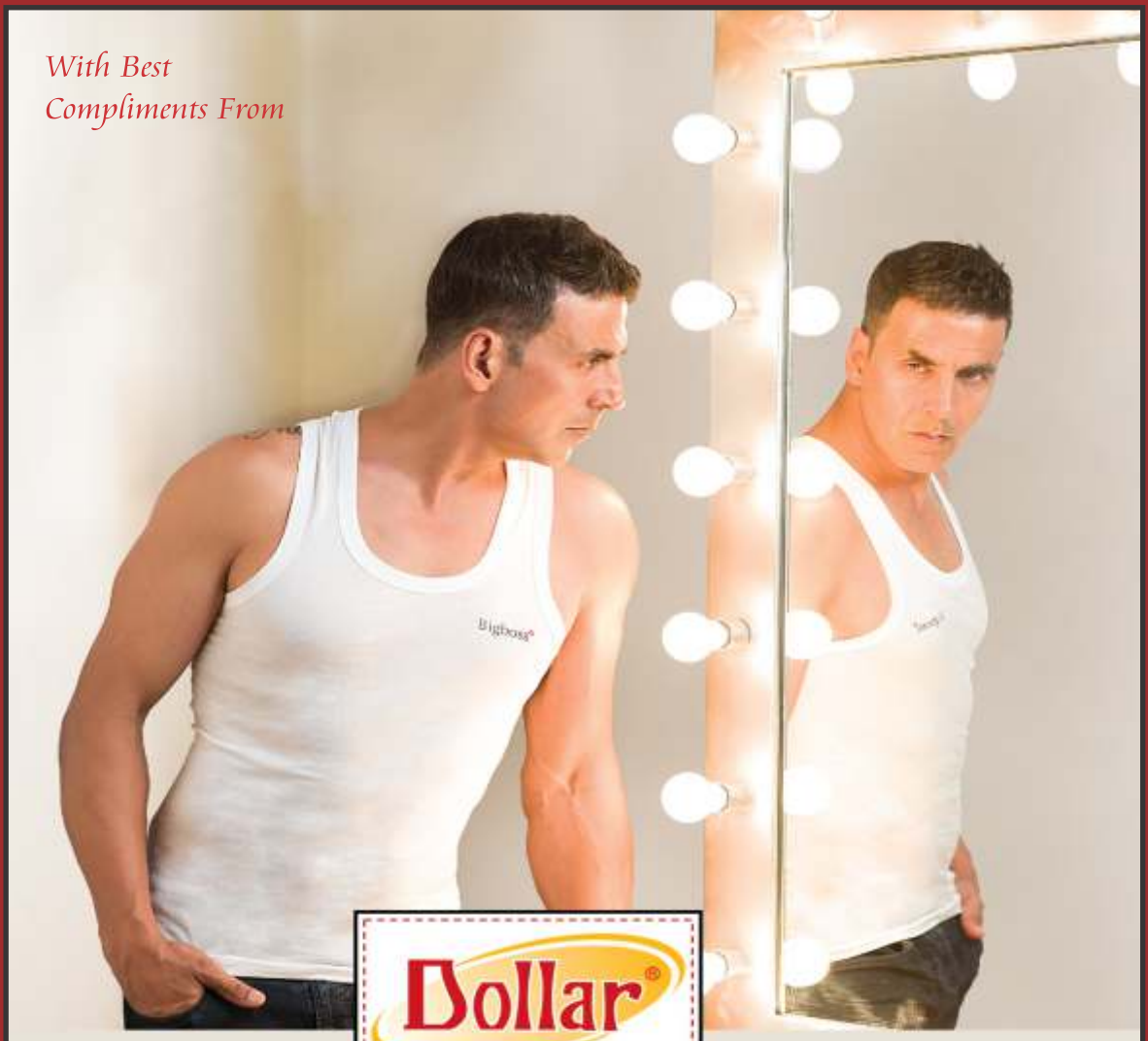

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित।
संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई–मेल : akhilg333@gmail.com